

॥ गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुदे नमः ॥



गु

रु

Darkness

Remover

‘गु’ यानि भीतर का अंधकार...
‘रु’ यानि उज्जाला-सूर्य का प्रकाश!
सूर्य के प्रकाश की भाँति उज्जाला देकर
जो अंधकार को दाल दे वो
गुरु!



21 जुलाई 2024— गुरुपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन निमित्त महापूजा...



गुरुपूर्णिमा निमित्त य.पू. गुरुजी एवं य.पू. दीदी को हार द्वारा भाव अर्पण...



प.पू. गुरुजी की निशा में सेवक साधु की दीक्षा प्राप्त करते पू. शैलेशभाई आचार्य, पू. विजय शर्माजी
पू. दिनेश मेहराजी, पू. सतीश शर्माजी, पू. हरिशंकर शर्माजी...





गुरु बिन ज्ञान न होत है, गुरु बिन दिशा अजान गुरु बिन इन्द्रिय न सधें, गुरु बिन बढ़े न शान...

आषाढ़ मास की पूर्णिमा यानि व्यासपूर्णिमा का अत्यंत महत्व है, क्योंकि प्रभु की प्राप्ति करवाने का माध्यम गुरु हैं - जीव का जीवन हैं! गुरु अपनी कृपा दृष्टि से शिष्य के भीतर अनंत काल से विद्यमान हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा, अपेक्षा, स्वभाव, महत्वाकांक्षा जैसी कालिमाओं को दूर करके प्रभु की ओजस भरते हैं। गुरु की पल-पल की क्रिया प्रभु प्रेरित है और वे परब्रह्म की भक्ति करते हुए, अपने संपर्क में आने वाले मुमुक्षुओं को परमात्मा को पाने का मार्ग बताते हुए, प्रभुमय जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

जैसे सूरज कभी घटता-बढ़ता नहीं है, वैसे प्रभु भी शाश्वत् और उनका व उनके धारक संत का संबंध भी शाश्वत् है। गुरु पहले एक शिष्य के रूप में अद्यात्म मार्ग पर चलते हुए, साधना के कई उतार-चढ़ाव पार करके, उनकी गहराइयों को समझ कर, अपने अनुयायी के लिये राजमार्ग प्रशस्त करते हैं। यह उनकी आश्रितों पर अप्रतिम करुणा है। सो, गुरुपूर्णिमा तो गुरु द्वारा किए गए असीम उपकारों का ऋण अदा करने और उनके वचन का अक्षरशः पालन करने का संकल्प करके, उनके हृदय में स्थान प्राप्त करने का पवित्र दिन है। भारत के सभी प्रांतों में यह पर्व भक्तिभाव से मनाया जाता है और सब अपनी-अपनी भाषा में गुरु के प्रति अपना भाव भी प्रकट करते हैं। **मराठी** भाषा की निम्न पंक्तियों द्वारा गुरु की अद्भुत महिमा का एहसास होता है —

गुरु माझां गणगोत, गुरु हीच माउली। गुरु स्पर्श दूर करी, दुःखाची सावली॥

गुरु भेटीसाठी झाली, जीवाची काहिली, भक्त तुझा गुरुदेवा पुरता अटल।

अर्थात् गुरु मेरा गोत्र, वे ही मेरे माता-पिता हैं। गुरु के स्पर्श से दुःख की छाया दूर होती है, गुरु दर्शन के लिए मेरी आत्मा समर्पित है। गुरुदेव के प्रति मेरी निष्ठा अचल रहे।

इस बार 21 जुलाई 2024 को गुरुपूर्णिमा निमित्त सुबह 9:00 बजे सब 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्र हुए। रंगीन गोल plastic sheets पर गुरुहरि काकाजी के हस्ताक्षर युक्त सूर्य के logo फूलों से सजा कर लगाये थे। श्री ठाकुरजी के सिंहासन के नीचे भोजन बनाते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज की दो मूर्तियाँ लगाई थीं। जिसके नीचे लिखा था —



एक बार गुरुवर्य शाल्वीजी महाराज ने गुरुहरि योगीजी महाराज को भोजन बनाने की आज्ञा दी। उनके वचन से प.पू. बापा ने बिना किसी फरियाद के 40 वर्ष तक निरंतर यह सेवा की। दूसरी ओर, दिल्ली के भारत साधु समाज की इमारत की फोटो के बीचोबीच गुरुहरि काकाजी महाराज के साथ प.पू. गुरुजी की मूर्ति दर्शायी थी और गुरुहरि काकाजी का निम्न आशीर्वाद लिखा था—

**यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा, प.पू. बापा की इच्छा है और तुम्हें जाना है...
इन दोनों मूर्तियों के ऊपर बड़े अक्षरों से लिखा था—**

आग्रका बचन, हमारा हो बर्तन...

प.पू. गुरुजी के सोफे के पीछे गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ गुरुहरि काकाजी की मूर्ति लगाई थी और उस पर भी उपरोक्त सूत्र लिखा था।

प.पू. गुरुजी की निशा में पू. मैत्रीशीलस्वामीजी ने गुरुपूर्णिमा की महापूजा का शुभ आरंभ किया। श्री ठाकुरजी को जीवन समर्पित करने हेतु पू. शैलेशभाई आचार्य, पू. विजय शर्माजी, पू. दिनेश मेहराजी, पू. सतीश शर्माजी एवं पू. हरिशंकर शर्माजी ‘सेवक दीक्षा’ प्राप्त करने महापूजा में यजमान के रूप में बैठे। दीक्षा विधि आरंभ करते हुए दीक्षार्थियों ने हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञा-संकल्प किया। पू. कौशिकभाई जानी ने दीक्षार्थियों का पूजन किया, पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी ने मंगलस्वरूप कलावा बांधा, पू. राकेशभाई ने badge दिया, पू. ओ.पी अग्रवालजी ने ड्रेस दी, पू. सुहृदस्वामीजी ने पूजा दी और प.पू. गुरुजी ने कंठी एवं गुरुमंत्र दिया। दीक्षा विधि के अंत में ‘नारायणी सेना’ में दीक्षार्थियों का स्वागत करते हुए, पू. जयप्रकाशजी, पू. आशीष शाह, पू. आनंद शुक्लाजी, पू. सुरेश मेहराजी और पू. लक्ष्मी शुक्लाजी ने उन्हें हार अर्पण किया।

तदोपरांत गुरुपूर्णिमा निमित्त श्रीजी महाराज को प्रिय मोगरे के फूलों का हार प.पू. गुरुजी को सभी की ओर से पू. डॉ. कैलाश सिंहजी एवं मुंबई के पू. भाविनभाई मेहता, जो पू. अनिलभाई माणेक के परिचय से पहली बार दिल्ली मंदिर आये, दोनों ने मिल कर अर्पण किया। पंजाब के मुक्तों की ओर से पू. दर्शनसिंह भट्टीजी तथा पू. प्रेम कुमार ढंडजी ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। पू. हरिशंकर शर्माजी एवं उनके सुपुत्र पू. गौरव शर्मा ने, पू. श्यामलालजी व पू. राम वर्माजी ने भी प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके अपनी भावना व्यक्त की। इसी प्रकार,



प.पू दीदी को सभी बहनों व भाभियों का भाव अर्पण करते हुए पू. हेतल ठक्कर एवं पू. जूही ठक्कर ने उन्हें हार अर्पण किया। पू. निशि दीदी का 60वाँ जन्मदिन था, सो उस निमित्त प.पू. दीदी ने अपनी प्रसादी का हार उन्हें पहनाया और आशीर्वाद का कार्ड व स्मृति भेंट दी।

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई शाह ने महापूजा का निम्न संकल्प पढ़ कर प्रार्थना की—

गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने गुरु शास्त्रीजी महाराज के वचन से 40 साल तक अहोभाव से भोजन बनाने की सेवा करके केवल गुरु को ही नहीं, बल्कि एक सेवक की अदा से भक्तों को भी राजी किया... इसी प्रकार, **गुरुहरि काकाजी महाराज** के वचन से प.पू. गुरुजी विपरीत परिस्थितियों में उत्तर भारत में आकर बसे और हमें प्रभु का संबंध देकर निहाल किया... **गुरुहरि काकाजी** की आज्ञालपी मूर्ति को साथ लेकर, उनके वचन पर अटूट विश्वास रख कर, दिन-रात देखे बिना भक्तों की परवरिश करके कुटुंबभाव का समाज रच दिया। तो, हमारे गुणातीत खरूपों के आदर्शों-सिद्धांतों पर चलते हुए गुरुपूर्णिमा का सूत्र—‘आपका वचन, हमारा हो वर्तन’ हमारे जीवन का ध्येय बने...

ऐसी भावना के साथ सबने धुन की। इसी दौरान, प.पू. गुरुजी ने नित्य पूजा भी की। जिसे पू. मैत्रीशीलस्वामी ने मोगरे के फूलों से बहुत सुंदर सजाया था। पूजा में भी आज सूत्र लिखा हुआ था। धुन के बाद महापूजा विधि संपन्न हुई और पू. राकेशभाई एवं सेवक पू. विश्वास ने गुरुपूर्णिमा निमित्त नया भजन—‘ये साधु आये हैं, आये हैं...’ प्रस्तुत किया। पू. ऋषभ गोयल ने ‘ओ करम खुदाया है, तेरा आसरा पाया है...’ भजन और पू. डॉ. दिव्यांग ने गुजराती भजन—‘मङ्यो साचो मुक्तिनो देनारो...’ गाकर भक्ति अदा की।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्वाद दिया—

...गौर से सोचें तो ‘गुरु’ शब्द में ही आशीर्वाद समाया है। ‘गु’ का अर्थ है भीतर का अंधकार... ‘रु’ यानि उजाला—सूर्य का प्रकाश! सूर्य के प्रकाश की भाँति उजाला देकर जो अंधकार को टाल दे—वो गुरु! जितने भी गुरु हुए, उन सभी ने अपने शिष्यों के साथ ऐसा संबंध रखा है। शिष्य को अंधेरे में से उजाले में लाकर प्रगति के पथ पर चलाया है। तो आज के दिन हम आशीर्वाद दें, उसके बजाय ‘गुरु’ शब्द में से ही हम लगातार आशीर्वाद खींचते रहें और अपने जीवन को उजाले की ओर अग्रसर करते रहें। यही गुरुपूर्णिमा का मर्म है, जो हमें सभी गुरुओं ने समझाया। काकाजी ने तादृश करके एक ऐसे समाज का सर्जन किया। गुणातीत समाज



काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, सोनाबा और जशभाई साहेब की देन है। काकाजी ने ही सबसे पहले योगीजी महाराज की सबको पहचान करवाई और योगीजी महाराज को केन्द्र में रख कर इस समाज का विकास करवाया। नई और कोई बात करनी नहीं है। काकाजी का ये ऋण हम कभी भूलें नहीं। भूलें नहीं, मतलब इन्हें अखंड प्रगट रखें। काकाजी को प्रगट रखने की एक ही करामत है कि भक्तों के अंदर सुहृदभाव और इनमें निर्दोषबुद्धि रखें। ऐसे समाज में काकाजी अखंड-सदैव प्रगट रहे हैं, रहते हैं, रहेंगे।

योगीजी महाराज कहते थे— ‘एकता ही एकांतिकभाव।’ काकाजी ने संप, सुहृदभाव और एकता की ये बात पकड़ी और सारे समाज को ‘हम सब एक हैं’ की भावना में डुबो-डुबो कर एक नूतन गुणातीत समाज का सर्जन किया। फिर पप्पाजी को जोड़ा और खुद अन्य कार्यों में व्यरत होने के कारण बहनों का कार्यभार पप्पाजी को सौंपा। युवकों का कार्यभार साहेब को सौंपा। युवकों का मतलब भी पप्पाजी ने समझाया कि आदर्श के लिये दृढ़ रहे—वो युवक! अपना आदर्श क्या? भगवान को रखे हुये साधु को अखंड भीतर में प्रगटायें और खुद उनका स्वरूप बन जाएँ—ब्रह्मभाव में रहते हो जाएँ। ब्राह्मीशक्ति भीतर में प्रगटा कर मूर्तिमान करे—वो सच्चा गुणातीत का सेवक। ऐसी गुणातीत परंपरा मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी द्वारा जो शुलुहुई, वो आज तक चलती आई है और आगे भी चलती रहेगी। ऐसे भगवत्स्वरूप संत को केन्द्र में रखते हुए एकता से आनंद कलोल करते रहें। अपने ढंग से पिक्चर देखने जाना है, वो एकता नहीं है। भगवान और संत को रखे हुए इस समाज की एकता को बनाये रखने के लिये अपना सब कुछ उसमें होम कर सकें। अपनी ‘ism’, मान्यता, सत्य, स्वाहिशें सब छोड़कर बस एक प्रभु राजी हों ऐसा ही करना है, ऐसा ही इस समाज में बोना है और इस प्रकार समाज के अंदर हमें ओतप्रोत होना है—ये भावना रखें, यही प्रार्थना...

इस पावन पर्व पर गाँधी नगर के पू. राजेश खन्नाजी ने भी फूलों की चादर के रूप में अपना भाव प्रकट करना चाहा, सो आशीर्वाद के उपरांत प.पू. गुरुजी के समक्ष रखी गई मेज पर उसे बिछाया गया। पंक्तिबद्ध होकर संतों, युवकों तथा हरिभक्तों ने श्री ठाकुरजी का पूजन करके, पू. सुहृदस्वामीजी से टीका करवा कर, प.पू. गुरुजी का पूजन किया। दूसरी ओर, बहनों व भाभियों ने गुरुपूर्णिमा निमित्त प.पू. दीदी का पूजन किया। इस दौरान पू. डॉ. पंकज रियाज़जी ने लगातार भजन गाते हुए वातावरण को दिव्यता से भर दिया। गुरुपूजन करने के बाद महाप्रसाद लेकर सभी धन्य हुए।

13 जुलाई 2024, सद्गुरु आनंदानंदस्वामीजी द्वारा निर्मित 'जेतलपुर' के
श्री स्वामिनारायण मंदिर के दर्शनार्थ...



‘गंगा माँ’ के कुटीर में श्रीजी महाराज की प्राप्तादिक वस्तुओं की प्रदर्शनी में
सदू. आनंदानंदस्वामीजी की
प्रसादी के चिमटे का दर्शन...

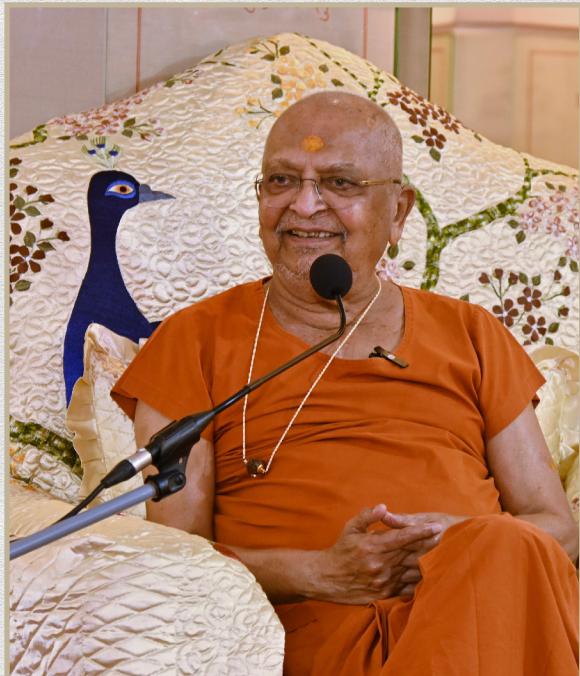




प्रगट प्रभु के संग ग्रासादिक स्थल का दर्शन करके धन्य होते मुक्त...



सायं ब्रह्मज्योति के प्रांगण में प.पू. गुरुजी का अभिनंदन...



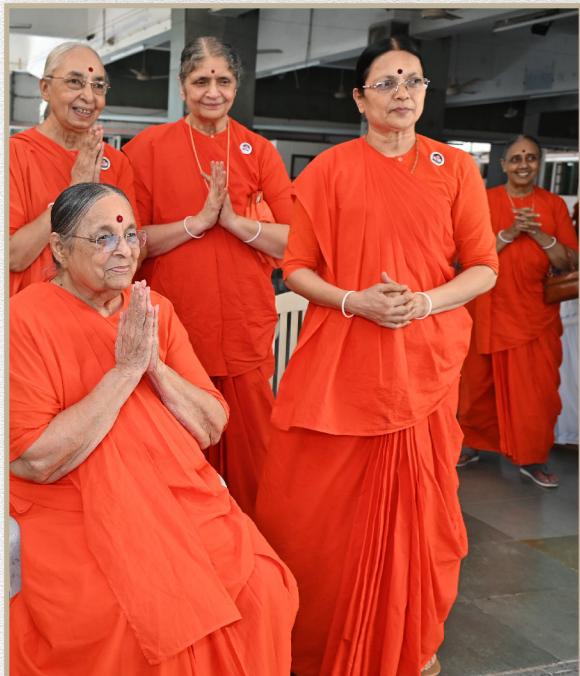
साहेब के जीवन से ये सीखें कि
हम जो कुछ भी करें, वह दिल की गहराई
और
सहज अवस्था में करें...

— प.पू. गुरुजी

14 जुलाई, सुबह—समाधि स्थल पर दर्शन के उपरांत ‘ज्ञानयज्ञ विद्यालय’ में
व.पू. गुरुजी द्वारा वृक्षारोपण...



‘यप्याजी तीर्थ’ पर पू. आचार्यस्वामीजी के लिए धून-प्रार्थना...



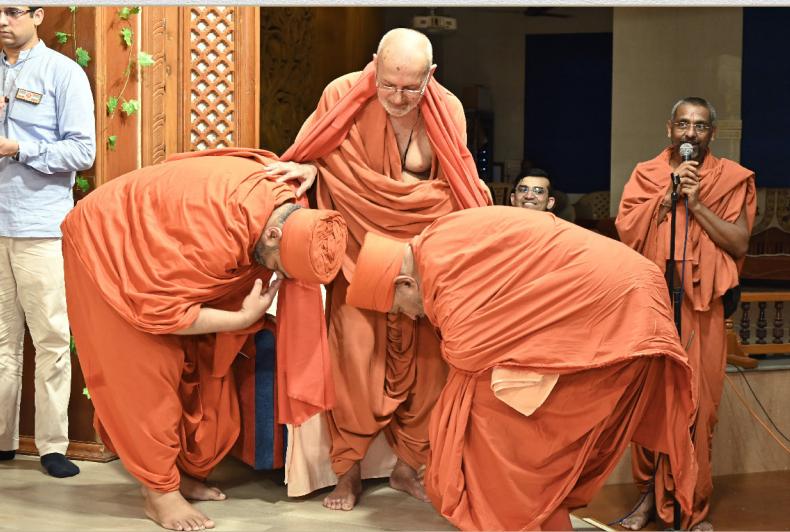
गुणतीत ज्योत के प्रवेश द्वार पर
प.पू. हंसा दीदी की ओर से भाइयों
द्वारा प.पू. गुरुजी को हार अर्पण...

15 जुलाई, सुबह—गुरुहृति योगीजी महाराज की प्रसादी के कुएँ के दर्शनार्थ...



अनुयम मिशन के
‘योगी विद्यापीठ’ की स्मृतियाँ...

सायं 'हरिधाम' में य.पू. गुरुजी के आगमन पर स्वागत सभा...



16 जुलाई, सुबह—मुंबई में श्रीमान निरंजन हीरानंदानीजी के ऑफिस,
पू. सनिल भिण्डे के Sage Cafe एवं यू. रोहित मिश्नीजी के घर यधरामणी...



पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर की पावन किया...



17 जुलाई, पवई मंदिर के दर्शनार्थ...





'Double Decker Bus' में बैठ कर मुक्तों को आनंद कराया...

यू. प्रमीतभाई संघवी की factory एवं यू. डॉ. केयुरभाई के घर यधरामणी...



18 जुलाई, सुबह—पू. अनिलभाई माणेक के नये घर पर...

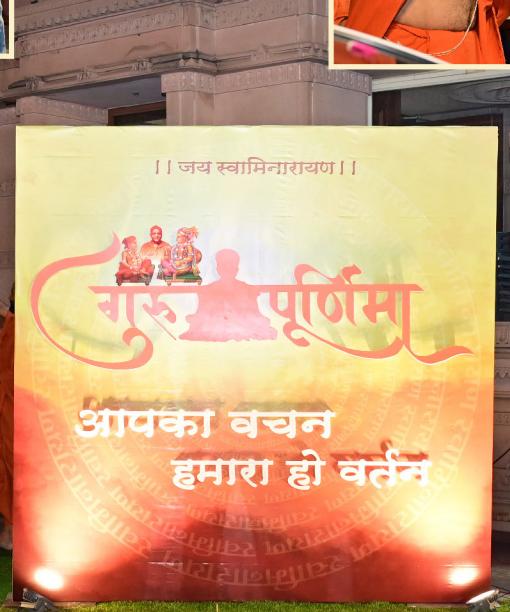


य.पू. गुरुजी की निशा में भगवान भजने के सार्व यर अग्रसर हीते
पू. नीरव की परिवारजनों द्वारा हर्षपूर्वक विदाई...



WELCOME NEERAV

रात्रि की दिल्ली मंदिर में प.पू. गुरुजी का आगमन व पू. नीरव का स्वागत...





પ.પૂ. ગુરુજી કા જીવલક્ષી ગુજરાત - મુંબઈ વિચરણ

ગુરુહરિ યોગીજી મહારાજ કે વરદ હસ્તોં સે દીક્ષિત, ગુણાતીત સ્વરૂપોં કે પ્રસન્નતા પાત્ર પૂ. આચાર્યસ્વામીજી કર્ફ સાલોં સે વિદ્યાનગર-ગુણાતીત જ્યોત કે ‘પણ્ણાજી તીર્થ’ પર રહતે હુએ સત્સંગ સેવા મેં તત્પર થે। કુછ સમય સે વે ઇતને અસ્વસ્થ થે કિ ગુણાતીત સમાજ કે સમી કેન્દ્રોં કે મુક્ત સમય-સમય પર ઉનસે મિલને જાતે। પ.પૂ. ગુરુજી કી આયુ કો ધ્યાન મેં રહતે હુએ, જુલાઈ મહીને કે પહલે સપ્તાહ મેં ઉનકી ઓર સે પૂ. સુહૃદસ્વામીજી કે સાથ કુછ મુક્તોં ને પૂ. આચાર્યસ્વામીજી કે દર્શનાર્થ કાર્યક્રમ બનાયા। પરંતુ, જિસ દિન જાના થા તમી પ.પૂ. ગુરુજી ને અલ્ય અસ્વસ્થતા ગ્રહણ કી ઔર સબકા જાના રદ્દ હુઆ। કુછ સમય કે બાદ એહસાસ હુआ કિ યહ સબ પ્રભુ કી હી યોજના થી। 13 માર્ચ 2024 કો સેવક કી દીક્ષા પ્રાપ્ત કિયે મુંબઈ નિવાસી પૂ. અનિલભાઈ માણેક કે પૌત્ર એવં પૂ. મિલન માણેક કે સુપુત્ર પૂ. નીરવ ને 18 જુલાઈ કો ઘર સે વિદાઈ લેકર, દિલ્લી મંદિર મેં સ્થાયી રૂપ સે આને કા નિશ્ચય કિયા। પ.પૂ. ગુરુજી કી ઓર સે પ્રતિનિધિત્વ કરતે હુએ મંદિર સે કુછ મુક્ત ઉસે લેને કે લિયે જાને વાલે થે। તબ પ.પૂ. ગુરુજી ને સેવકોં સે કહા કિ વે સ્વયં ઉસે લેને કે લિએ મુંબઈ જાયેંગે। સો, ગુજરાત મેં અપને કેન્દ્રોં મેં દર્શન કરકે, પણ્ણાજી તીર્થ પર પૂ. આચાર્યસ્વામીજી સે મિલ કર, ફિર વહીં સે મુંબઈ જાને કા પ.પૂ. ગુરુજી કા કાર્યક્રમ બનાયા ગયા। તબ પ્રતીતિ હુર્ફ કિ પ.પૂ. ગુરુજી કે અંતર મેં તો પૂ. આચાર્યસ્વામીજી સે મિલને કી તીવ્ર ઝચ્છા થી, ઇસલિયે સબ સંયોગ બને।

13 જુલાઈ 2024 કી સુબહ કરીબ 10:15 બજે પ.પૂ. ગુરુજી, પૂ. સુહૃદસ્વામીજી એવં મુક્તોં કે સાથ મંદિર સે Airport જાને કે લિએ નિકલે ઔર ફિર સાયં 4 બજે અમદાવાદ Airport પહુંચે। પ.પૂ. ગુરુજી કે દર્શન હેતુ અમદાવાદ કે સ્થાનીય હરિભક્ત ચાય-કોફી એવં નાશતા લેકર વહીં આયે થે। Airport સે નિકલતે સમય પ.પૂ. ગુરુજી ને જેતલપુર મંદિર કે દર્શન કરને જાને કી ઝચ્છા જાહિર કી। પહલે ભી કર્ફ બાર પ.પૂ. ગુરુજી વહીં ગયે થે; પરંતુ ઉનકે સાથ કર્ફ નયે મુક્ત ભી થે, સો ઉન્હેં ભી દર્શન કરને કા અવસર પ્રાપ્ત હો રહા થા।

યહ વહી મંદિર હૈ જિસકા નિર્માણ ભગવાન સ્વામિનારાયણ ને સદ્ગુરુ આનંદાનંદસ્વામીજી દ્વારા કરવાયા થા। ઇસમેં શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ વ શ્રી રેવતી-બલદેવજી કી મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠિત હૈ। ભગવાન સ્વામિનારાયણ ને અપને આશ્રિતોં કો યહીં પર જો ઉપદેશ દિયે, વે ‘વચનામૃત’ ગ્રંથ કે ‘જેતલપુર’ વિભાગ મેં સંકલિત હૈને। શ્રીજી મહારાજ કે સમય મેં યહીં ‘ગંગા મા’ નામ કી વૃદ્ધ સત્સંગી મહિલા રહતી થીને। વે ભક્ત - કવિ નરસિંહ મેહતા કી વંશજ થીને। શ્રીજી મહારાજ સે ઉન્હેં અતિશય પ્રીતિ થી। વે ઉન્હેં અપને પુત્ર સમાન રનેહ કરતી થીને। જબ ભી મહારાજ જેતલપુર પધારતે,



तो हर्ष से उन्हें भोजन परोसतीं। यदि महाराज समय से भोजन ग्रहण नहीं करते, तो वे निराश हो जातीं। कई बार तो वे महाराज की सवारी के पीछे-पीछे सिर पर टोकरी के अंदर जलते चूल्हे के ऊपर भोजन लेकर चलती थीं, ताकि कहीं पर भी महाराज को गर्म-ताजा भोजन परोस सकें। उनकी ऐसी भक्ति, मातृत्वभाव व ममता को देख श्रीजी महाराज उन्हें 'माँ' कह कर पुकारते थे। इसलिए सारा सत्संग समाज भी उन्हें 'गंगा माँ' कह कर संबोधित करता था। साधु बनने के पश्चात् प.पू. गुरुजी एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ इस प्रासादिक स्थल पर आये थे। यहाँ रखे हुए सद्. आनंदानंदस्वामीजी के चिमटे की ओर इशारा करते हुए प.पू. बापा ने प.पू. गुरुजी से पूछा—**मकंद, इसे पहचानते हो?**

प.पू. गुरुजी ने कहा— **नहीं, बापा मुझे नहीं मालूम।**

बाद में जब गुरुहरि काकाजी के साथ प.पू. गुरुजी पुनः यहाँ आये, तब उन्होंने प.पू. गुरुजी को बताया—

तुम पाँच जन्मों से साधु बनते आ रहे हो; महाराज के समय के 'आनंदानंदस्वामी' हो और यह तुम्हारा चिमटा है। यह मंदिर आनंदानंदस्वामी ने बनवाया था...

सायं 6 बजे प.पू. गुरुजी जेतलपुर मंदिर पहुंचे। वहाँ के संत पू. अक्षरस्वामीजी ने आदरभाव से प.पू. गुरुजी एवं संतों को नज़दीक से श्री हरिकृष्ण महाराज के दर्शन करवाये। मंदिर के प्रांगण में स्थित 'गंगा माँ' के कुटीर में श्रीजी महाराज की प्रासादिक वस्तुओं सहित सद्. आनंदानंदस्वामी के प्रसादी के चिमटे का दर्शन करने के बाद सबने **मोगरी-अनुपम मिशन** के लिए प्रस्थान किया।

सायं करीब 7:30 बजे ब्रह्मज्योति पहुंचे, तो फूलों की वर्षा, ढोल और आतिशबाज़ी से संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी का भव्य अभिवादन करवाया। मंदिर के हॉल में भी उपस्थित मुक्तों ने प.पू. गुरुजी का स्वागत करके अपने भाव व्यक्त किए। पू. सरजूदासजी ने प.पू. गुरुजी का पूजन एवं पू. रतिकाका ने हार अर्पण किया। अनुपम मिशन के साधक भाइयों ने पुष्प गुच्छ से संतों, सेवकों व हरिभक्तों का तथा पू. ज्योति बहन पोपट व पू. सीमा बहन ने बहनों-भाभियों का अभिवादन किया। **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया—

जब भी ब्रह्मज्योति आना होता है, तब मुझे सहज ही मन में होता है कि योगी परिवार के मुखिया के पास जा रहे हैं। सिर्फ कहने के लिए नहीं, बल्कि मैं मानता हूँ कि सभी सत्युरुषों के अंतर्धान होने के बाद, साहेब ने पूरे समाज को संभाला और साथ रखा है। थोड़े समय पहले गुणातीत ज्योत में देवी बहन धाम में गए, तब आनंदी दीदी आई थीं। उन्होंने मुझे कहलवाया



કિ તब સાહેબ જિસ વાત્સલ્ય સે હંસા દીદી સે મિલને ગયે ઔર ઉન્હેં આશ્રણ કિયા વો દૃશ્ય દેખને જેસા થા। ઉસે કેમરે મેં મી capture કિયા હૈ। અગર સાહેબ કા વર્તન સિર્ફ ઔપचારિકતા હોતા, તો વહ અસર નહીં કરતા। સાહેબ કે જીવન મેં સે હમ યે સીખેં કિ હમ જો કુછ કરેં, વહ દિલ કી ગહરાઈ ઔર સહજ અવસ્થા મેં કરેં। એસા હોણા તો હમ ઔર સમાજ દોનોં ઉત્થાન કે લિએ અગ્રસર હોંગે। યહોઁ આને કા હેતુ યહી હૈ કિ કિસી ન કિસી વરતુ, માવના યા પ્રસંગ કી સ્મૃતિ કરેં ઔર ઉસસે સમાજ કા નિમણ કરેં। સાહેબ કા એસા જીવન હમેં પ્રેરણ દેતા રહે। અગર હમ કુછ ગફલત મેં ચલે ગયે હોં, તો હમેં ઝાંઝોડ કર, સજા કરેં ઔર જાબરદસ્તી મી પ્રગતિ કે પથ પર ચલાયે, યહી આજ કે દિન પ્રાર્થના।

તત્પ્રશાત् પ.પૂ. ગુરુજી કા ગુણાનુવાદ કરતે હુએ **સંતભગવંત સાહેબજી** ને આશીષ બરસાયે—
...આચાર્યસ્વામી સે ખ્રાસ મિલને-દર્શન દેને કે લિયે ગુરુજી પથારે, સચ મેં ખૂબ આનંદ હુઅા...
યોગીજી મહારાજ એક અલોકિક ઔર મંગલકારી પુરુષ ઇસ ધરતી પર આએ, હમને ઉનકા સ્પર્શ,
આશીષ ઔર પ્યાર પાયા। ઉનકી કૃપા, ગુણાતીત અવસ્થા ઔર પ્રમુતા કા દર્શન કિયા। શાસ્ત્રીજી મહારાજ ને કહા થા— ‘યોગી યાનિ મેં ઔર મેં યાનિ યોગી।’ **શાસ્ત્રીજી મહારાજ કે અંતર્ધારન હોને**
કે બાદ બાપા બોચાસણ સંસ્થા કી ગઢી પર આએ। તબ સે ઉનકા એક મંત્ર થા કિ મેરે ગુલદેવ
શાસ્ત્રીજી મહારાજ કે કાર્ય કો બઢાતે હુએ અક્ષરપુરુષોત્તમ ઉપાસના કા પ્રચાર કરના હૈ ઔર
ઇસકે લિએ ઉન્હોને યુવકોં કો તૈયાર કિયા। વે તો કહતે થે— ‘યુવક મેરા હૃદય હૈ।’ ઇસ મંત્ર કો
ધ્યેય બના કર બાપા ને યુવકોં કો બહુત પ્યાર દિયા, ઉનકે સાથ બહુત સમય વ્યતીત કરતે। તબ
સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય મેં પઢે-લિખે સંત કાફી કમ થો। સો, 1952 સે બાપા ને બિંગુલ બજાયા
કિ મુઢ્ણે 51 પઢે-લિખે યુવકોં કો સાધુ બનાના હૈ... તબ ગુરુજી મી ઉનકે જોગ મેં આયે, ઉનકા
પૂર્વશ્રમ કા નામ દિલીપમાઈ થા। ઉન્હેં દાઢુકાકા ઔર સોનાબા કે પ્રતિ અસાધારણ પ્રેમ થા।
કાકાજી ને ઉનસે કહા કિ બાપા કી ઇસ યોજના મેં રુમ જુડ જાઓ। ગુરુજી કહતે થે કિ મુઢ્ણે
સાધુ નહીં બનના। લેકિન, બાપા-કાકાજી કી કૃપા સે 1961 મેં જો 51 સંત બને, ઉસમે
દિલીપમાઈ કા નંબર લગા ઔર સાધુ મુકુંદજીવનદાસ બને। દાદર મંદિર મેં મહંતસ્વામી કે
સાનિધ્ય મેં રહે। *Bombay University* સે *B.Sc.* પઢે હુએ બહુત *genius*, ઉત્સાહી ઔર ઉમંગી
સાધુ હેં... કાકાજી કે સાથ અસાધારણ પ્રેમ કે વશ સાધુ હુએ ઔર બાપા કી આજ્ઞા સે સંસ્કૃત પઢ
કર ઉનકી પ્રસંજ્ઞા પ્રાપ્ત કી। 1966 મેં હિન્દુપ્રસાદસ્વામી કે સાથ સોખડા આએ। ઇસસે પહલે વે
કમ્ભી ગાঁઁવ મેં નહીં રહે થે। પર, જૂન કી મયંકર ગર્મી મેં વહોઁ કે પુરાને મંદિર મેં રહે... ગુરુજી
ઔર સંતોં કો ધન્યવાદ હૈ કિ ખૂબ કસની કી ભવિત્ત મેં રહે। બાપા કા દિયા વચન કિ હમેં ભગવા



वर्ष नहीं छोड़ना है, तो इतनी विपरीत परिस्थिति में भी उनके वचन का पालन किया...

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के कार्य की सटीक पहचान दादुकाका ने सबको करवाई। तीन फरवरी 1952 के साक्षात्कार के बाद काकाजी ने कुछ बातें बताईं—

पहली बात— अक्षरधाम के तऱ्हत पर जो महाराज विराजमान हैं, वे योगीजी महाराज के रूप में हमें मिले हैं। देह को छोड़ के जिन्हें पाना था, वे जीतेजी बापा के रूप में मिले हैं। करोड़ों व्रत, तप, दान करके जिन्हें पाना था, वे प्रभु हमें सहजता से योगीजी महाराज के रूप में मिले। ऐसे भाव से उन्होंने बापा का दर्शन-सेवा की, उनकी आङ्गारा का पालन करते हुए हमारे साथ रहे। उन्होंने बताया कि बापा की प्रसन्नता मिलेगी, तो हम सुखी हो जाएँगे।

दूसरी बात— निर्दोषबुद्धि रखो। प्रगट की शुद्ध उपासना का परिचय काकाजी ने दिया।

तीसरी बात— सर्वदेशीयता। जिस गुरु के प्रति आपको आत्मबुद्धि-प्रीति है, जिन गुरु से भगवान ने हमें जोड़ा है, उनकी आङ्गारा में रहें और सब में एक जैसा दिव्यभाव व पूज्यभाव रखें। ये बातें काकाजी ने बताईं। आज गुरुजी सर्वदेशीयता का मूर्तिमान स्वरूप हैं। पहला दिल्ली और दूसरा माणावदर का केंद्र, पूरे गुणातीत समाज के लिए सर्वदेशीयता का आदर्श है। कोई भी वहाँ जाए, तो समझाव से उनकी सेवा-आवभगत करते हैं। गुरुजी सच्चे अर्थ में काकाजी का सेवन करके काकारूप बने हैं।

जब नंदाजी भारत की राजनीति में मंत्री बने, तो मुंबई से सीधा दिल्ली में यूनियन कैबिनेट मिनिस्टर की पदवी मिली। शास्त्रीजी महाराज नंदाजी के बंगले पर मुंबई गये थे। दादुकाका भी वहाँ हाजिर थे। विदाई के वक्त नंदाजी का सम्मान हुआ, तब शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति देते हुए कहा—जाओ, अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का डंका बजे, ऐसा दिल्ली में मंदिर बनाना है। मगर नंदाजी अपने कार्यों में इतना ज्यादा व्यस्त रहे कि समय नहीं मिला। नंदाजी को काकाजी के प्रति भी बहुत प्रेम था, क्योंकि काकाजी ने बापा के वचन से उन्हें बहुत support किया था। सो, काकाजी ने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की मरणी जान कर 1969 में जब गुरुजी को दिल्ली के साथु समाज में भेजा, तो कोई सत्संगी ही नहीं था... इतनी सर्दी के मौसम में प्रेमस्वरूपस्वामीजी इनकी सेवा में रहे... हमारे वी.एस, वल्लभदास, बैरिस्टर भी सेवक के रूप में गये थे। वहाँ खाने-पीने, रहने की इतनी तकलीफें थीं, पर इन्होंने काकाजी के वचन को पकड़े रखा। अभी तो दिल्ली का इतना अच्छा समाज-मंदिर बन गया—शून्य में से सर्जन हुआ। गुरुजी के वचन का अक्षरशः पालन करके इतनी महिमा और समर्पण से सब भक्त रात-दिन लगे हुए हैं... भगवान कहते हैं कि अपनी सांसारिक प्रवृत्ति करो, पर जब



गुरु की आज्ञा आये, तो सब कुछ छोड़ कर उनकी आज्ञा का पालन करने लग पड़ो। भगवान और संत का होकर जीने वाले के लिए संसार है ही नहीं, उनके लिये अक्षरधाम है। महाराज, गुरुजी को अच्छे स्वास्थ्य से दीर्घायि दें। जिस साधु ने बापा से दीक्षा ली-जिनके साथ गुरुजी रहे, ऐसे आचार्यस्वामी का स्वास्थ्य देखने के लिये गुरुजी अपनी नादुरस्त तबीयत को देखे बिना, इतने सारे संतों-मुक्तों को लेकर पथारे। हमें सेवा का लाभ मिला, यह हमारा अहोभाग्य है और ऐसी सेवा देते रहना...

सभा के उपरांत संतभगवंत साहेबजी स्वयं प.पू. गुरुजी को श्री ठाकुरजी के दर्शन करवाने ले गये। श्री ठाकुरजी की सेवा करते पू. सुरेशदासजी ने प.पू. गुरुजी को यहाँ 'बादाम' का हार अर्पण किया। दर्शन के बाद सभी 'योगी प्रसाद' हॉल में प्रसाद लेने गये। अनुपम मिशन के परिसर में 'भवित्त प्रसाद' नामक नया स्थान बनाया है, जिसमें संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से प.पू. गुरुजी के लिये विशेष कक्ष बनवाया है। सो, प.पू. गुरुजी संतों-मुक्तों के साथ वहीं ठहरे।

14 जुलाई की सुबह 'योगी प्रसाद' में नाश्ता करने के बाद, गुरुहरि काकाजी महाराज व प.पू. शांति दादा के समाधि स्थल पर सब गए और संतों-मुक्तों ने पुष्प हार द्वारा भावांजलि दी। ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा की समाधि पर बहनों ने पुष्प अर्पण करके प्रार्थना की। ब्रह्मज्योति में संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से प्रति रविवार 'हवन' किया जाता है। इस दिन रविवार होने के कारण एवं सद्गुरु संत प.पू. शांति दादा के दिव्य अस्थि कलश को कन्याकुमारी में विसर्जित करने हेतु 'हवन' का आयोजन था। संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से दिल्ली की बहनों व भाभियों ने 'हवन' की विधि की। हवन पूर्ण होने के पश्चात् प.पू. गुरुजी ने सद्गुरु संत प.पू. शांति दादा के अस्थि कलश का पूजन किया। तत्पश्चात् 11:30 बजे अनुपम मिशन द्वारा संचालित 'ज्ञानयज्ञ विद्यालय' के प्रांगण में पू. डॉ. धनंजयभाई ने प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से वृक्षारोपण करवाया। यहाँ से दोपहर करीब 12 बजे सब 'पप्पाजी तीर्थ' पहुँचे। पू. विज्ञानस्वामीजी, प.पू. गुरुजी, संतों, सेवकों व भाइयों को पू. आचार्यस्वामीजी के पास लेकर गए। प.पू. गुरुजी की निशा में सभी ने पू. आचार्यस्वामीजी के स्वास्थ्य हेतु धुन की और फिर उनके सेवक पू. अनिलभाई जोशी (नरोडा) ने प.पू. गुरुजी को पुष्प हार अर्पण किया। प्रसादी का यह हार प.पू. गुरुजी ने पू. आचार्यस्वामीजी को पहनाया। तत्पश्चात् सब शाश्वत् धाम-गुरुहरि पप्पाजी महाराज के समाधि स्थल की परिक्रमा करने गये। पू. हंसाबेन गुणातीत व पू. डॉ. नीलम बहन के साथ दिल्ली की बहनों-भाभियों ने परिक्रमा, धुन-भजन किया और फिर Ice Cream का प्रसाद



लेकर सब ‘गुणातीत ज्योत’ गए। वहाँ के प्रवेश द्वार पर गुणातीत प्रकाश के भाइयों के साथ प.पू. हंसा दीदी व बहनें प.पू. गुरुजी के दर्शन - स्वागत के लिए उपस्थित थीं। पू. महेन्द्रभाई एवं पू. जीतूकाका ने हार अर्पण करके प.पू. गुरुजी का अभिवादन किया। प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का हार साथ में गए पू. नमन को पहनाया और उसे प.पू. हंसा दीदी को दंडवत् करने की आज्ञा दी। पू. नमन ने प.पू. हंसा दीदी को दंडवत् किया, तो उन्होंने उसे ‘छोटा नक्षु’ कह कर अपने गले लगा लिया। तत्पश्चात् सभी प्रसाद लेकर अनुपम मिशन लौटे। संतभगवंत साहेबजी तो सद्गुरु संत अश्विन दादा के प्रागट्योत्सव निमित्त अनुपम मिशन के ‘वेमार मंदिर’ गए थे। सो, सायं 8 बजे प.पू. गुरुजी की निशा में ब्रह्मज्योति में भजन संध्या हुई। पू. सरजूदासजी, पू. राहुलभाई पटेल एवं सेवक पू. विश्वास ने भजन प्रस्तुत किये। भजन संध्या के बाद प्रसाद लेकर सभी अपने ठहरने के स्थान पर गये।

15 जुलाई की सुबह नाश्ता करने के बाद, संतभगवंत साहेबजी स्वयं प.पू. गुरुजी और उनके साथ गये मुक्तों को अनुपम मिशन में स्थित गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसादी के कुएँ का दर्शन कराने ले गये और फिर इसी परिसर का ‘योगी विद्यापीठ’ दिखाने ले गए। यह Information Technology (IT) centre है और यहाँ अनुपम मिशन का Desktop Publication Department, Audio-Video Department और Playback Recording Room भी है। Playback Recording Room में संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी को भजन गाने का आग्रह किया, तब प.पू. गुरुजी ने धुन और ‘धाम, धामी मुक्तोनी साथे...’ भजन की कुछ पंक्तियाँ गाई। दोपहर 1:15 बजे यहाँ से हरिधाम-सोखड़ा के लिए रवाना हुए और वहाँ पहुँच कर सबने प्रसाद लिया। प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी विदेश की धर्मयात्रा के लिए गये थे। सायं 5:30 बजे ‘योगी प्रार्थना हॉल’ में प.पू. गुरुजी की स्वागत सभा का आयोजन था। प.पू. दासस्वामीजी व प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। प.पू. गुरुजी के साथ गए मुक्तों का पुष्प गुच्छ से अभिवादन किया गया। 17 जुलाई को देवशयनी एकादशी के अनुसार प.पू. दासस्वामीजी की प्रागट्य तिथि थी। सो, प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली मंदिर की ओर से सेवक पू. अभिषेक व पू. विश्वास ने उन्हें हार व शाल अर्पण की। तत्पश्चात् **प.पू. दासस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया—

5-7 मिनट में गुरुजी जैसे संतवर्य का क्या दर्शन कराऊँ? दो उदाहरण देता हूँ—
यहाँ हरिधाम से जो मुक्त दिल्ली गये होंगे, उन्हें पता होगा कि काकाजी का अरिथ कुंभ दिल्ली मंदिर में स्थापित करके, वहाँ बढ़िया मार्बल-ग्रेनाइट से ‘अक्षरतीर्थ’ समाधि स्थान बनवाया है।



કાકાજી જિસે ગુણાતીત સર્વદેશીયતા ઔર ગુણાતીત સુહૃદભાવ કહતે, વહ ગુરજી કે અંતર મેં બરસાંથી સે હૈ, ઇસકે હમ સાક્ષી હોએ હુએ થે ઔર સ્વામીજી ને ઉન્હેં દુલા ભગત નામ દિયા થા, તબ સે ઉન્હેં મી ખ્યાલ હૈ કે ગુરજી કે જીવન મેં કિતની ગુણાતીત ખાનદાની હૈ! પણ જી કે સ્વધામ સિધારને કે બાદ ઉનકા અસ્થિ કુંભ ગુરજી ને વહીં સ્થાપિત કરવાયા ઔર અબ જબ સ્વામીજી સ્વધામ પથારે, તો ઉનકા અસ્થિ કુંભ મી ઉન્હોને વહીં સ્થાપિત કરવાયા હૈ। યોગીજી મહારાજ કે સંકલ્પ ઔર કાકાજી કે પ્રતિ અપ્રતિમ પ્રીતિ કે વશ ઉન્હોને યે બુન્દ ઉમ્દા કાર્ય કિયા। યહ ઉન્હોને ગુણાતીત સમાજ મેં અપને આપકો *justify* કરને કે લિએ નહીં કિયા। બલિક ઉનકે અંતર કા એક ઐસા સુહૃદભાવ હૈ કે જો વહીં પરિક્રમા ઔર દર્શન કરને જાયેં, તો એક સમાન તરીકે સે બાપા કે હી ભાવ સે કાકાજી, પણ જી ઔર સ્વામીજી કો યાદ કરકે પ્રદક્ષિણા કર સકોં। બઢતી ઉમ્ર ઔર શારીરિક અસ્વસ્થતા કે કારણ વે બાર-બાર તો યહીં નહીં પથાર સકતે ઔર યહીં સ્મૃતિ મંદિર કે દર્શન નહીં કર સકતે। ઇસલિએ, અપને અંતર કે આનંદ કે લિએ ઔર જિસ સ્વરૂપ સે જુડે જો કોઈ ભક્ત આએ, ઉન્હેં મી પ્રદક્ષિણા કરને મેં ઉત્તા હી આનંદ હો, એસે ખૂબ ખાનદાની ભાવ સે ઉન્હોને તીવોં સ્વરૂપોં કે અસ્થિ કુંભ વહીં પથરાયે હોએ સ્વામીજી ઔર સાહેબ દાદા કી મૂર્તિયોં તો કલ્પવૃક્ષ હોલ મેં પથરાઈ હી હોએ, પર યહ મી બુન્દ ઉત્તમ ગુણાતીત ખાનદાની ઔર સર્વદેશીયતા કા દર્શન હૈ। ઇસકે લિયે ઉન્હેં કિસી કે *certificate* કી જાળત નહીં હૈ, અપની આત્મા કે સંતોષ ઔર આનંદ કે લિએ ઉન્હોને યહ કિયા હૈ ઔર ગુણાતીત સમાજ કે કિસી મી કેંદ્ર કે ભક્ત વહીં પથારે, તો ઉન્હેં આનંદ હો ઇસલિએ ઉન્હોને યહ કિયા હૈ। ઉસકે લિયે ‘કાર્ય’ શબ્દ તો બુન્દ છોટા હૈ; યું કહેં કે ઉન્હોને ‘આયોજન’ કરકે એક ઐસા સમાજ તૈયાર કિયા હૈ। મંદિર કે પરિસર કા નામ ‘તાડદેવ’ દિયા હૈ। મંદિર કો જાતી હુફી *street* કા નામ ‘કાકાજી લેન’ ઔર બાહર કી *main road* કો ‘સ્વામિનારાયણ માર્ગ’ કે નામ સે પ્રશસ્ત કિયા। કાકાજી કી *postal stamp* સરકાર દ્વારા જારી કરવાઈ। ઉનકા અપના કુછ નહીં, *logo* સે લેકેર પત્રિકા દ્વારા યા હર જગ્હ ઉન્હોને કાકાજી કો હી ઉદ્ઘોષિત, પ્રકાશિત ઔર પ્રસિદ્ધ કિયા હૈ। કાકાજી કે પ્રતિ યે ઉનકા અનોખા સેવકભાવ કહા જાએ!

ઉન્હોને આત્મબુદ્ધિ ઔર પ્રીતિ વાળા સમાજ તૈયાર કિયા હૈ। *Bone grafting* ઔર *operation* કે લિએ દૂસરી-તીસરી બાર ડૉ. કમલ દુરેજા કે પાસ મેરા દિલ્લી જાના હુઅા। ગુરજી કી આજ્ઞા સે અબ રાકેશમાઈ ઔર કોશિકમાઈ વહીં કા વ્યાવહારિક હિસાબ-કિતાબ સંભાલતે હોએ બઢે *hospitals* મેં ઐસા *rule* ઔર *discipline* હોતા હૈ કે જબ તક *full payment*



न हो, तब तक patient को छुट्टी नहीं मिलती। मुझे इस बारे में पता नहीं था। मुझे दस बजे discharge देने वाले थे, तो राकेशभाई वहाँ आये। जब थोड़ी देरी हुई तो मैंने राकेशभाई से पूछा कि कितना bill हुआ? तब पता चला कि 1 लाख 34 हजार का bill बना। मैंने उनसे पूछा कि आप कैसे व्यवस्था करोगे? वे बोले—आप चिंता नहीं करना, आपकी गाड़ी आ गई है तो आप मंदिर जाकर आराम करें, payment के बारे हम देख लेंगे। उन्होंने गुरुजी को फोन भी नहीं किया और दस ही मिनिट में पैरे जमा करवाने की कार्यवाही करके मुझे सहलियत करते हुए अस्पताल गालों से कह दिया कि ये हमारे बड़े संत हैं, उन्हें जाने दें। मैं यहाँ बैठा हूँ, amount मिलने के बाद आप 'हाँ' करोगे, तभी मैं यहाँ से जाऊँगा। यह सब देख कर मेरी आँखों में आँसू आ गये। उस वक्त मुझे गुरुजी का तो क्या आभार मानना? पर, वे मेरे लिए और प्रेमस्वामी जब साधु समाज में उनकी सेवा में थे, तब से त्वमेव माता च पिता त्वमेव... श्लोक के अनुसार माता-पिता तो हैं, पर सखा, गुरु, बड़े भाई, सद्गुरु और भगवदी भी हैं। खून के रिश्ते के भाई से भी अधिक संबंध है, जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके। ऐसे भाव और ममता से उन्होंने हमारा जतन किया है और अभी भी कर रहे हैं। सच में ये bill वाला प्रसंग तो मुझे खूब असर कर गया। बाद में मैंने प्रेमस्वामी और ज्ञानस्वरूपस्वामी को कहलवाया। बड़ी रकम थी, इसलिए थोड़ा समय लगा। इस बात को करीब 15 दिन हो गये, लेकिन राकेशभाई ने मुझसे पूछा तक नहीं या indirectly कहा भी नहीं कि दासस्वामी उस रकम का क्या हुआ? ये बहुत बड़ी बात है, सामान्य बात नहीं। सगा भाई या सगा बाप भी 10 मिनट में इतनी बड़ी रकम की व्यवस्था नहीं करेगा। पर, राकेशभाई ने गुरुजी को फोन तक नहीं किया और गुरुजी को कहा भी नहीं कि मैंने ऐसा step लिया है। तो, नक्षत्र से लेकर कौशिकभाई जैसे बड़े तक में गुरुजी ने इस तरह का सिंचन किया है। ये गुरुजी की खूब तपस्या है और काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के साथ गुरुजी का घनिष्ठ संबंध है...

गुरुजी हरिधाम को अपना घर मानते ही हैं। पर, हम प्रार्थना करते रहें कि स्वास्थ्य की सानुकूलता हो, तो ऐसे पथार कर दर्शन-समागम का लाभ देते रहें। योगी बापा, काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा रखें कि उन्हें दौड़-दौड़ के यहाँ आते रहने का मन हो। हमें निरंतर उनका लाभ मिलता रहे। दिल्ली के समाज के तो वे प्राणाधार हैं, पर भारत और शिकागो की पूरी योगी डिवाईन सोसाइटी के वे प्राणाधार संतवर्य हैं...

अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीष वर्षा की—

जब भी गुजरात आने का मेरा programme होता है, तो मुझे सहज आनंद हो जाता है। क्योंकि



जिनके साथ हम पले-बढ़े, खेले और सद्गुरु पद को पाए उनसे मिलना होता है। पर, यह सारा श्रेय स्वामीजी, काकाजी, पप्पाजी, साहेब जैसी विभूतियों को जाता है। उन्होंने *out of the way* जाकर मेरा जतन किया... ये तो मेरा 'मायका' कहा जाये। इसलिए आप सब प्रभु से विनती-प्रार्थना करते रहना कि हर साल इस तरह-इससे भी विशेष समय निकाल कर, मैं हरिधाम-सोखड़ा, ब्रह्मज्योति, विद्यानगर, सांकरदा आया करूँ और उसमें कोई खामी न रहे... पूरा आन्मीय परिवार इकट्ठा हुआ है। इस परिवार के प्रेम की बढ़ोतरी होती रहे, यानि प्रेमस्वामी जिस भी कार्य के लिए आगे बढ़ें, उसमें हम भी अग्रसर रहें—ऐसा बल, बुद्धियोग प्रगट प्रभु हमें देते रहें, यही प्रार्थना।

हरिधाम के संतों-मुक्तों का भाव ग्रहण करके प.पू. गुरुजी वडोदरा एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। पू. ज्ञानरवूपस्वामी व पू. सुबोधस्वामी, प.पू. गुरुजी को Airport तक छोड़ने आये। रात को करीब 12:30 बजे प.पू. गुरुजी मुंबई Airport पहुँचे। वहाँ प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई के साथ पवई के कुछ मुक्त तथा मुंबई के कुछ स्थानीय हरिभक्त प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने आए थे। प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया तथा गुलाब के फूलों से अन्य सभी का स्वागत किया। पवई के Hiranandani Gardens - Raj Grandeur Building में पू. मिलनभाई माणेक ने अपने मित्र पू. परेशभाई पारेख के घर प.पू. गुरुजी के ठहरने की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। कुछ मुक्त पवई मंदिर से जुड़े पू. अनिल साहोरजी (फिलहाल अबु धाबी निवासी) के घर रुके।

16 जुलाई की सुबह नाश्ते के बाद, करीब 10 बजे प.पू. गुरुजी को प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई Real Estate Developer श्रीमान निरंजन हीरानंदानीजी (Co-founder & Managing director of Hiranandani Group) से मिलवाने उनके ऑफिस लेकर गए। यहाँ धुन-भजन करके उन्हें आशीर्वाद रूप गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति वाला चांदी का memento दिया। तत्पश्चात् कांदिवली (ईस्ट) के ठाकुर विलेज में पू. सनिल भिण्डे के 'Sage Cafe' में गये। पिछले वर्ष प.पू. गुरुजी 15 जुलाई को पहली बार यहाँ आए थे और अब पूरे एक वर्ष बाद पुनः यहाँ आकर पू. सनिल को आशीर्वाद लिख कर दिये। इसके बाद पू. मिलन माणेक के मित्र पू. रोहित भिण्डी के restaurant 'East Aisa' एवं उसी के ऊपर स्थित उनके घर पर पथरामणी करके, पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर लोखंडवाला (Green Acres) पहुँचे। 14 जुलाई को पू. दीपक अग्रवाल का जन्मदिन था, सो उस उपलक्ष्य में सभा करते हुए प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं प.पू. गुरुजी ने सबको निम्न आशीर्वाद दिया—

प.पू. भरतभाई—...स्वामिनारायण भगवान् पृथ्वी पर मानव रूप में भारत की भूमि पर प्रगट



हुए और इतना अच्छा वरदान दिया कि जो आज तक किसी अवतार ने नहीं दिया कि अपने निर्मल संतों द्वारा पृथ्वी पर में अखंड प्रगट रहूँगा। हम भाग्यशाली हैं कि ऐसे संतों का संबंध मिल गया। भक्तचिंतामणि में निष्कलानंदस्वामी ने गाया है कि कामधेनु-गाय, कल्पतरु-पेड़, पारसमाणि और चिंतामणि—इन चारों में से कोई भी एक चीज़ आपके पास हो; तो घर में आराम से-चैन से सोते रहो, कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। मगर इन चारों से भी अधिक संत हैं। क्यों? क्योंकि संत ये चारों हमें दे सकते हैं, पर ये चारों संत नहीं दे सकते। कल्पतरु के नीचे बैठ कर जो संकल्प करोगे, वो मिलेगा। लेकिन, संत हमें वो देते हैं, जिससे शाश्वत् सुख मिले। ये चारों सोचते नहीं हैं कि हित में है या नहीं, बस माँगा और तुरंत दे दिया। लेकिन, हमने कुछ माँगा होगा और वह हमारे हित में नहीं होगा, तो आप कितना भी रोओगे या कुछ भी करोगे, पर संत वो नहीं देंगे। संत हमारे परम हितकारी-परम कल्याणकारी हैं। इसलिए संत सर्वश्रेष्ठ हैं, जो गुरुजी के रूप में हमें प्राप्त हुए। हमें उनका संबंध नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने हमें ग्रहण किया कि मझे, आप मेरे हो। यह कितनी बड़ी बात है। किसी को डाँट कर भी स्मृतियाँ देते हैं...

आज हम गुरुजी के साथ हीरानंदानीजी को मिलने गये थे। उन्होंने बहुत अच्छी बात कही कि दुनिया में आजकल आप जितना भी ज्यादा अच्छा करो, वो कम है। क्योंकि वो अच्छाई का काम कम पड़ रहा है, वो और ज्यादा होना चाहिए। ऐसे संत हमें अच्छाई का कार्य करने की प्रेरणा देते हैं, इसके लिए ये बहुत ज़रूरी हैं...

आज स्वामिनारायण के कितने मंदिर बन रहे हैं, कितने संत बन रहे हैं। गुरुजी हमारा जितना ख्याल रखते हैं, ऐसा दुनिया में कोई भी नहीं रख सकता। हमारे जीव-चेतना के हित के लिये वे हमेशा तत्पर रहते हैं, हेतुलक्षी नहीं—जीवलक्षी जीवन जीते हैं...

काकाजी हमेशा कहते कि मैं लकड़ी की तलवार से लड़ता हूँ और जीतता हूँ। यह तो नामुमकिन है, मगर काकाजी ऐसे थे। काकाजी की पूरी प्रसन्नता हमारे गुरुजी पर है। ऐसे गुरुजी हमें प्राप्त हुए, हम धन्य हो गये। गुरुजी की निशा में आनंद करते रहें, यही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई—...गुरुजी सेवकों को ज़बरदस्ती करनी में रख के मनमुखी में से गुरुमुखी बना देते हैं... जो गुरु की मर्जी में मन को मरोड़ देता है, वो सच में गुरुमुखी हो जाता है। गुरुजी के संत, सेवक सब गुरुमुखी हैं, इसीलिए इनके घेरे पर आनंद है... सेवकों को गुरुजी ने जो ट्रेनिंग दी है, वो अद्भुत है... संत हमारे अंदर गुण भरते हैं... जहाँ प्रभुधारक संत हाज़िर होते हैं, वहाँ सब चीज़ अपने आप आ जाती है... गुरुजी सब भक्तों को ऐसे आशीर्वाद दें कि काकाजी और वे जो कराना चाहते हों, वो हम कर पायें...

प.पू. गुरुजी—भरतभाई-वशीभाई ने अच्छी बातें की कि जिन्हें काकाजी का स्थूल जोग नहीं



हुआ, उन्हें ऐसा होता है कि हमें भी उनका दर्शन होता तो बहुत अच्छा रहता। पर, जैसे कि भरतभाई और वशी ने कहा कि स्वामिनारायण भगवान ने वरदान दिया है कि जब तक धरती पर मानव जीवन रहेगा, ऐसे संत द्वारा वे मानव स्वरूप में प्रगट रहेंगे। हमें ऐसा होता है कि प्रगट तो रहेंगे, लेकिन हमें ख्याल ही न पड़े, तो क्या होगा? पर, ऐसा नहीं है। 'संत' शब्द का अर्थ मैंने पहले भी बताया था कि जिस संत के संपर्क में तुम आये हो, उनके साथ संबंध बने। संत शब्द ही ऐसा है कि जो अंत तक साथ रहे, वो संत। मर जायें तब तक नहीं, बल्कि जब तक हमारी चेतना ब्राह्मीरिथति को न पा जाए; हम ब्रह्मस्वरूप न हो जाएँ, तब तक हमारे पीछे लगे ही रहें। हम खूब सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे अखंड प्रवाह में हमें स्नान करने और ब्राह्मीरिथति का आनंद प्राप्त करने का मौका मिल गया। महाराज ने हम पर ये असाधारण-अकारण करुणा की है। क्योंकि हमने न कोई ऐसा कर्म किया और न ऐसी कोई अपेक्षा भी रखी थी। जैसे मुझे तो साधु होना ही नहीं था, 51 युवकों में कई ऐसे थे। लेकिन पृथ्वी के शब्दों में गर्दन पकड़-पकड़ के सबको साधु की पंकित में बिठा दिया और महंतस्वामी, डॉक्टरस्वामी जैसे सब जो साधु बने, वे भगवान के अखंड धारक बन गए हैं। आज भी वह प्रवाह बह रहा है, इस संबंध को हम बरकरार रखें, यही प्रार्थना।

सभा के बाद पू. डॉली दीदी व पू. मानसी द्वारा भाव से बनाए भोजन से श्री ठाकुरजी का थाल करके सभी ने प्रसाद लिया और अपने ठहरने के स्थानों पर पवई लौटे।

17 जुलाई को देवशयनी एकादशी निमित्त प.पू. गुरुजी एवं सभी हरिभक्त पवई मंदिर गए और वहीं नाश्ता किया। प.पू. गुरुजी के दर्शन-समागम हेतु पवई मंदिर से जुड़े हरिभक्त एकत्रित हुए थे। सो, घरेलू सभा में पू. अश्विनभाई व पू. हरखचंदभाई ने आगामी दिनों में आने वाली गुरुपूर्णिमा का स्मरण करते हुए, सभी की ओर से प.पू. गुरुजी का पूजन करके हार अर्पण किया। प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई ने पान के पत्ते पर चित्रित गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति प.पू. गुरुजी को स्मृति भेंट के रूप में दी। तत्पश्चात् प.पू. भरतभाई तथा प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्वाद दिया—

प.पू. भरतभाई—आज नियम की एकादशी के पवित्र दिन गुरुजी ने पवई मंदिर में दर्शन देकर सब भक्तों को खुश कर दिया... आज तिथि के अनुसार दासस्वामी का प्रागट्य दिन है। उनसे फोन पर बात हो रही थी, तो वे गुरुजी को याद करते हुए धन्यवाद दे रहे थे कि इस उम्र में तीस भक्तों के साथ मुंबई में सब जगह धूम रहे हैं। क्योंकि यहाँ तो इतनी सारी जगह पर दो लोगों के साथ धूमना भी मुश्किल होता है...

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि शासितुं योग्यः इति शिष्य



यानि जिस पर गुरु शासन करें, वो सच्चा शिष्य! जो गुरु की मरजी को जाने, उनसे ऐसा संबंध बनाए— वो सच्चा शिष्य! काकाजी हमेशा कहते थे कि हमें गुरु तो सच्चे मिले ही है, उसमें कोई संदेह है ही नहीं। योगीजी महाराज जैसे गुरु के प्रति कोई शंका करे, तो उसका भाव्य फूटा कहा जाये। तो, ऐसे जो गुरु मिले हैं वे तो सत्य हैं, मगर अभी हमें सच्चा शिष्य बनाना है। वो कैसे? तो सबसे पहले उनकी मरजी जाननी है।

“एक राजा ने अपने लड़के को गुरु के पास भेजा। गुरु ने कहा कि मैं इसे पक्का शिष्य बना दूँगा, लेकिन, उसमें इसकी जान भी जा सकती है। राजा ने कहा— कोई बात नहीं; मैंने आपको सोंप दिया है, आपको जैसा बनाना है वैसा बनाओ।

शिक्षा की शुरुआत करते हुए गुरु ने उससे कहा— तुम सावधान रहना, मैं कभी भी लकड़ी की तलवार लेकर आऊँगा और तुम पर वार करूँगा।

तो, दिनभर शिष्य का ध्यान गुरु की ओर रहता कि वे कहाँ हैं, अभी उसके पास आएँगे। पर, गुरु अचानक आते, तो एक-दो बार उसने मार खाई। लेकिन, बाद में वह सतर्क हो गया और कभी भी गुरु की आहट भी आती, तो एकदम अपने आगे ढाल रख लेता।

फिर गुरु ने कहा— अभी तुम जाग्रत अवस्था में तो मेरे साथ जुड़े ही हो, लेकिन तुम सो जाओगे, उसके बाद में भी मैं आकर तुम पर वार करूँगा।

शिष्य सोचने लगा कि जागने के समय तो मैं चौकन्ना रह सकता हूँ, पर सोने के समय कैसे रहूँगा?

गुरु ने बताया— व्यक्ति जब सोता है, तब भी उसका subconscious mind जाग्रत होता है, तो तुम्हें वो develop करना है। शिष्य वैसा तैयार हो गया। बाद में असली तलवार के प्रशिक्षण के लिये भी वह निपुण हो गया। लेकिन, जब सब कुछ आ जाता है, तब मान आ जाता है। शिष्य ने सोचा— मैंने तो गुरु को अब पूरी तरह जान लिया। गुरु जो बोलेंगे, जो चाहते हैं, वो मुझे पता चल जाता है।

सो, एक बार वो गुरु के पास गया, तो उनकी तलवार साथ में रखी थी। गुरु अपने काम में बहुत व्यस्त थे, तो उसने उनकी तलवार ले ली। उसने सोचा कि देखता हूँ कि गुरु खुद कितने सक्षम हैं? वो तलवार लेकर जैसे ही गुरु पर पीछे से वार करने आया, तो गुरु बोले— बेटा, तलवार वापिस रख दे, मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ। तब वह एकदम उनके पैरों में पड़ गया।” कहने का तात्पर्य यह है कि हम कितना भी सीख जाएँ, लेकिन हम में मान न रहे और गुरु के पास शून्य बन कर रहे। आज गुरुपूर्णिमा के अवसर पर यही माँगना है कि हम हमेशा शून्य बन कर रहे। हम कितना कुछ सीख जाएँ, लेकिन गुरु तो गुरु ही हैं। वे हमेशा हमारी हर प्रकार



से परवरिश करते हैं। वे अगर हमें मार भी देंगे, तो भी हमें अमर बना देंगे, इतना पक्का है। हमें उनके प्रति ऐसा पूरा समर्पण करना चाहिए। गुरु की मरजी समझ सकें, ऐसा बनना है। गुरु के रूप हो जाना है। ऐसे हम बनें वही गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है। गुरुजी के आशीर्वाद के सिवा कुछ नहीं हो सकता है। हम ‘जी हजूरी’ करते हुए प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन आप सदा ही हम पर आशीष वर्षा करते रहना...

प.पू. गुरुजी—...गुरुपूर्णिमा के निमित्त हम इकट्ठे हुए हैं, तो स्वूब ध्यान व याद रखना कि भरतभाई को कोई कम नहीं समझना। भरतभाई काकाजी को अखंड प्रगटाई हुई-अखंड धारी हुई एक विरल विभूति हैं। इनके द्वारा हर पल, हर समय, हर स्थिति में काकाजी सब कुछ अंगीकार कर रहे हैं। हम लोग खाना खाते हैं, तो शरीर की पुष्टि होती है, वह हष्ट-पुष्ट होकर ताक़तवर बन जाता है। भरतभाई खाना खाते हैं, वो खाना जरूराइन में जाकर वहाँ जो ब्रह्माइन है, उससे ब्रह्ममय भोजन बन जाता है। पूरा खाना ब्रह्ममय बन जाता है। ये बात अपने दिमाग में fit नहीं बैठेगी, complicated है। सभी पुराने संतों ने ये बातें करी हैं कि ऐसे बड़े संत खाना खाते हैं, तो खाना अन्नमय ब्रह्म होकर ब्रह्मस्वरूप बना देता है, खाने वाले को भी और अर्पण करने वाले को भी। भगवान् स्वामिनारायण ने एक ऐसी राह निकाली, जिसे काकाजी कहते धुधुबाज़ मार्ग निकाला, जहाँ हमें कोई साधन नहीं करना है। काकाजी भक्तचिंतामणि की लाइन गाते थे—

कोई कहे ये संत तो बहुत अच्छे, सच्चे कल्याण के दाता,
इतना ही गुण कोई ले, तो ब्रह्महोल में जा के उसका वास होगा।

तो, बस यही करना है। भरतभाई बहुत अच्छे हैं, ऐसा मानने में सबका क्या जाता है! काकाजी कहते थे कि सामने वाले को अच्छा कहने में तुम्हारे बाप का क्या जाता है? अब सिर्फ ये गुण हमें भेजे में नहीं लेना, बल्कि हृदय से स्वीकार करना है। तो, गुरुपूर्णिमा के अवसर पर मेरी भी ये ही प्रार्थना है। आप लोगों के लिए भी यही प्रार्थना है कि भरतभाई, वशीभाई जैसों का हमारे भीतर में ऐसा गुण बस जाए कि ऐसे संत तो और कहीं हैं ही नहीं। हमें जो मिले हैं, वे सर्वोपरि हैं। ये मानकर इनका सेवन करते रहें। सेवन क्या? तो इनकी आज्ञा-मरजी में हम आँख मूँद के चलते रहें, कोई शंका न करें। इनमें, इनके कार्य में और इनके साथ जुड़े हुए मुक्तों में भी हम शंका न करें। यही गुरुपूर्णिमा की सच्ची प्रार्थना, याचना और माँग है। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी हमारी ये अरजी-विनती स्वीकार करके हम पर कृपा बरसाएँ, यही आज के दिन प्रार्थना...

पवई मंदिर से प.पू. गुरुजी कोपरस्कैने स्थित पू. प्रभीतभाई संघवी की factory गए। यहाँ धुन-



भजन करके प्रसाद लेने के उपरांत बांद्रा गये और यहाँ से पवर्ड के पू. मितेशभाई शाह द्वारा व्यवस्था करवाई गई A.C. Double Decker Bus में बैठ कर, मुंबई शहर की विख्यात जगह एवं कुछ प्रासादिक स्थलों तथा हाल ही में निर्मित Coastal Road का दर्शन करके, सायं पू. डॉ. केयुरभाई अध्यर्यु के घर पहुँचे। यहाँ धुन - भजन करके सबने प्रसाद लिया और पवर्ड लौटे।

18 जुलाई की सुबह नाश्ता करके, दोपहर 1 बजे के करीब प.पू. गुरुजी घाटकोपर रहते पू. अनिलभाई माणेक के बन रहे नए घर में गए। जहाँ उनके पौत्र पू. नीरव का विदाई समारोह रखा था। Building के मुख्य द्वार पर ढोल बजवा कर प.पू. गुरुजी का स्वागत किया गया। तब पू. अनिलभाई माणेक के साथ कइयों ने ढोल पर नाच कर आनंद व्यक्त किया। घर में विराजमान होने के बाद प.पू. गुरुजी का पूजन व हार अर्पण किया। प.पू. गुरुजी की निशा में भगवान भजने के मार्ग पर अग्रसर हो रहे पू. नीरव का भावुक हृदय से दादा पू. अनिलभाई माणेक, दादी पू. दमी बहन, माता-पिता पू. मिलनभाई-पू. भूमि भाभी, चाचा-चाची पू. मेहुलभाई-पू. पूजा भाभी, छोटे भाई पू. कोहिनूर-पू. क्षेत्रज्ञ एवं उपस्थित सत्यंगियों व सगे-संबंधियों ने पूजन किया। ऐसे मंगल अवसर पर पू. मिलन माणेक ने अपने परिवार की ओर से, कार्ड द्वारा प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में पू. नीरव की सरल साधना की याचना की। तब प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई ने आशीर्वाद लिख कर दिये।

इसी दौरान, ‘पण्डी तीर्थ’ पर रहते पू. आचार्यस्वामीजी के अक्षरनिवासी होने का समाचार मिला। यह सुन कर सहज ही सबको मन में ऐसा हुआ कि जैसे कि प.पू. गुरुजी 14 जुलाई को तो उनसे मिल कर आये, तो मानो पू. आचार्यस्वामीजी इतने लंबे समय से प.पू. गुरुजी के आगमन की ही राह देख रहे थे... हरिधाम के प्रांगण में उनकी अंत्येष्टि संपन्न हुई।

दोपहर 3:15 बजे पू. नीरव को लेकर, प.पू. गुरुजी एवं सभी Airport के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी के साथ पू. मिलन माणेक, पू. भूमि भाभी और पू. क्षेत्रज्ञ भी दिल्ली आये। प.पू. गुरुजी की इच्छानुसार दिल्ली के कुछ स्थानीय सत्यंगी रात को 10:15 बजे तक मंदिर आ गये थे। मुक्तों ने पू. मैत्रीस्वरूपस्वामी के साथ मिल कर मंदिर के प्रवेश द्वार पर दीप प्रज्वलित किए और आंगन में बड़े अक्षरों से Welcome Neerav लिखा था। जैसे ही प.पू. गुरुजी की गाड़ी मंदिर के नजदीक आई, तो आतिशबाजी और पुष्प वर्षा से सबने स्वागत किया। प.पू. गुरुजी की ‘नारायणी सेना’ में प्रविष्ट हो चुके पू. नीरव का आरती-पूजन से संतों ने अभिनंदन किया। प.पू. गुरुजी की गाड़ी के सम्मुख मुक्तों ने आनंद - किलोल करके वातावरण को दिव्यता से भर दिया... इस प्रकार, प.पू. गुरुजी द्वारा तत्काल योजित जीवलक्षी विचरण निराली स्मृतियों से संपन्न हुई।



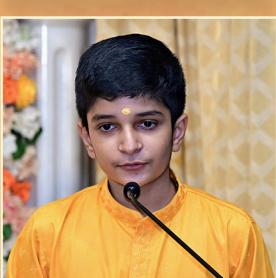
11 मार्च, सायं— अनुष्ठान शिविर का शुभारंभ...



सत्संग के बच्चों द्वारा
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामीजी की
बातों का यथन...



‘स्वामी की बातों’ को जीवन का आधार बनाने की प्रार्थना करते सत्संग के बालक...



य.पू. गुरुजी अनुष्ठान शिविर द्वारा सिर्फ एक महीने के लिए नहीं
बल्कि पूरा जीवन बदलने की Training देते हैं।

— य.पू. वशीभाई



13 May — Mother's Day Celebration



भावना से की गई कैसी भी सेवा भगवान को यहुँ चर्ती ही है।
धून भी यूर्ण श्रद्धा से करो कि महाराज सुन ही रहे हैं।

— प.पू. गुरुजी

शिविर में आई 'भक्ति आश्रम' की बहनों को स्मृति भेंट अर्यण...



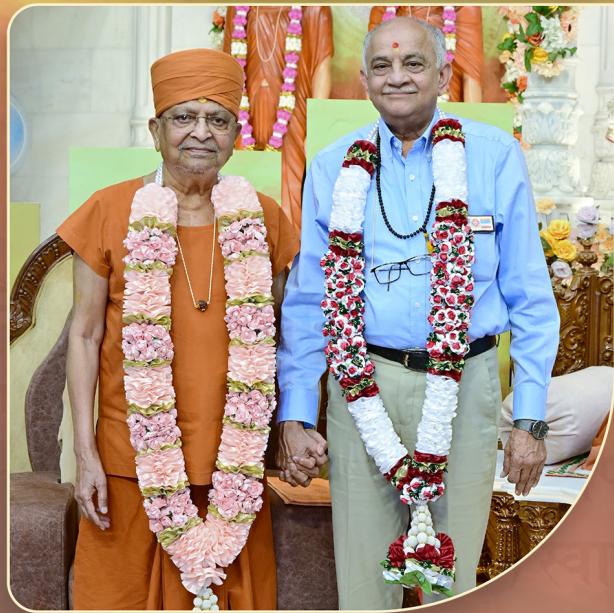
शिक्षा हेतु सत्संग के बच्चों को ग्रीत्साहन...



भजनों द्वारा सदैव भक्ति अदा करते 'सुर वृंद' का अभिवादन...



12 जून, सायं— गुरुहरि काकाजी महाराज का 106वाँ प्राक्तृयोत्सव



संत में भगवान काम करते हैं। वे भले मानव रूप में रहते हैं,
लेकिन अक्षरधाम से हमारे कल्याण के लिए आये हैं।

—प.पू. गुरुजी

■ Introspect

■ Think

Move On ▶



Suppose
any thought occurs in your mind
before giving any lift to it
Firstly pray
-then
Wait & remain in witnessing spirit
and -then go ahead! ”

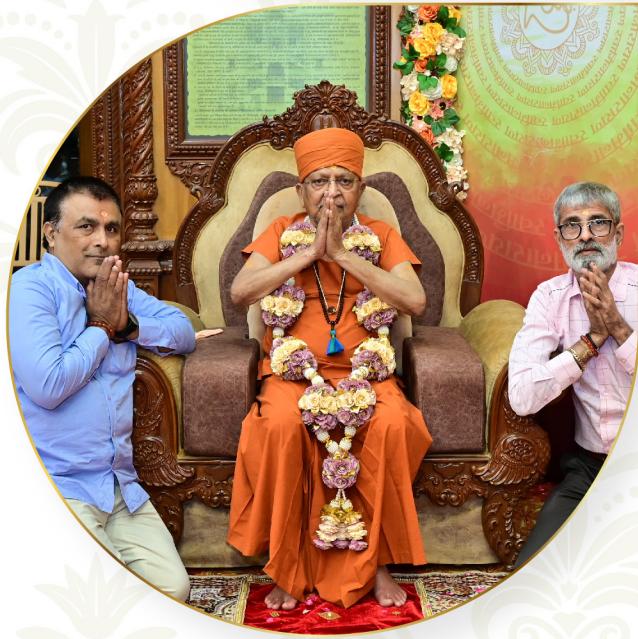
‘प्रभु मेरा अहित कर ही नहीं सकते...’
कैसे भी संजोगों में यह दृढ़ता जानी नहीं चाहिए।

— प.पू. गुरुजी



**अनुष्ठान
स्मृति**
2024

13 जून, सायं— प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व
एवं
अनुष्ठान शिविर की पूर्णहुति...





अनुष्ठान शिविर 2024

प.पू. गुरुजी अकसर बताते हैं—

अगर किसी का कोई कार्य रुका हुआ हो या किसी शुभ संकल्प की पूर्ति करनी हो, तो उसके लिए काकाजी अनुष्ठान करने का आग्रह रखते।

गुरुहरि काकाजी महाराज की इस बात की महत्ता समझाते हुए, सबके व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक श्रेय हेतु प.पू. गुरुजी एवं पू. भाईस्वामीजी ने 1990 में बच्चों की मई-जून की छुटियों के दौरान ‘अनुष्ठान शिविर’ का आरंभ किया था। इस शिविर की महत्ता समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद भी दिया है—

जो भी इस शिविर में आयेगा, वह सत्संग से-गुणातीत सत्पुरुष से जुड़ कर प्रभु का आसरा पायेगा।

वे इसे **Refresher Course** भी कहते हैं, क्योंकि शिविर में संतों और भक्तों का महिमा गान, गुणातीत संतों के प्रेरक प्रसंग, कथा-वार्ता से गुणातीत संत से संबंध वृढ़ करने, सुहृदभाव और एकता से जीने की नई ऊर्जा, उत्साह और प्रेरणा का संचार होता है। शिविर में मुक्त रोज़ समय से आएँ, इसलिये कई बार Prize द्वारा प्रोसाहन देकर भी प.पू. गुरुजी ने स्वयं गरज़ रखी है।

निरंतर आयोजित होते आए इस शिविर को इस वर्ष 34 साल पूरे हुए! बीच में ‘कोविड’ के चलते भक्तों ने दो वर्ष online और फिर प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य को मद्देनज़र रखते हुए, दो वर्ष 12-13 दिन ही शिविर का लाभ लिया। अतः चार वर्ष के उपरांत **11 मई 2024, शनिवार** को प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन से पूरे एक महीने का शिविर आंरभ हुआ। सायं 7 बजे से 20 मिनट की धुन करके, अज्ञान का तिमिर मिटा कर ज्ञान का दीपक जलाने की भावना से पू. सुहृदस्वामीजी, पू. कीर्तिभाई जानी, पू. पुनीत गोयलजी, पू. दलजीत सिंहजी, पू. श्यामलालजी एवं पू. देव झांझी ने श्री ठाकुरजी के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के दीक्षा दिन निमित्त सेवक पू. विश्वास एवं पू. ऋषभ नरला ने गुजराती भजन—‘स्वामीनी सेनामां आवजो रे...’ प्रस्तुत किया।

बच्चों को जैसा माहौल मिलता है, उसी के अनुसार वे ढल जाते हैं। सभी माँ-बाप की इच्छा होती है कि उनके बच्चे अच्छे संस्कार प्राप्त करके सद्मार्ग पर चलें। इसी भावना से गर्भी की छुटियों में मंदिर में प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में लड़के संतों और युवकों के साथ तथा अक्षरज्योति में प.पू. दीदी के ममत्व का एहसास करने बहनों के साथ लड़कियाँ खूब घुलमिल कर विभिन्न सेवाओं का लाभ लेने के लिये आते हैं। अच्छे संस्कारों के साथ-साथ बच्चों में



आध्यात्मिक ज्ञान के बीज भी अंकुरित हों, इस हेतु शिविर में लड़के हिन्दी में ‘स्वामी की बातें’ बोल कर अपना भाव व्यक्त करते हैं। सो, भजन के बाद पू. देव झांझी ने तीन स्वामी की बातें बोलीं और फिर पू. राकेशभाई, पू. ऋषभ नरला एवं सेवक पू. विश्वास ने — ‘काकाजी के हैं सेवक हम...’ भजन प्रस्तुत किया।

हर बार स्वामिनारायण संप्रदाय के अलग-अलग ग्रंथों का पठन करवा कर, प.पू. गुरुजी उसका निरूपण करके मुक्तों को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं कि किसी भी प्रकार अंतर के दोषों व भीतर की ग्रंथियों को पिघलवा कर, जीवन को प्रभु की मूर्ति से भर लेने की राह पर चलते रहें। 1978 में मनाई गई गुरुहरि काकाजी महाराज की हीरक जंयती के अवसर पर प्रकाशित हुए ‘सहृदयी’ ग्रंथ को इस बार प.पू. गुरुजी की निशा में पढ़ने का सुनिश्चित किया गया। ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के मार्गदर्शन में तैयार किये गए इस ग्रंथ के लेखन एवं संपादन की सेवा में प.पू. गुरुजी, प.पू. दासस्वामीजी, प.पू. शास्त्रीस्वामीजी दिन-रात तत्पर रहे थे। इस ग्रंथ का परिचय देते हुए ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी ने उल्लेख किया है —

जीव सदा सुख की तलाश में रहता है, लेकिन अपनी छुपी वासनाओं- स्वभाव के कारण वह दुःखी रहता है। जबकि प्रभु का स्वभाव है— सुहृदभाव! वे हमेशा सभी को सुखी करना चाहते हैं। इसी कारण जीवों को अपना संबंध देकर, उसे वृत्ति- स्वभाव से उबार कर, अपनी मूर्ति का सुख देने भगवान स्वामिनारायण धरती पर पथारे और साथ में अपने अक्षरधाम गुणातीतानन्दस्वामी को साथ लाकर एक आध्यात्मिक क्रांति कर दी। साथ ही गुणातीतभाव को पाये निर्मल- निष्कामी संतों की परंपरा दी और उनमें अखंड निवास करने का आशीर्वाद देकर सबको सदा के लिये सनाथ कर दिया।

प.पू. गुरुजी कई बार कहते हैं —

जगत में सब प्रभु पाने के लिए साधना करते हैं, लेकिन हमें तो वो सर्वोपरि प्रभु- परब्रह्म तत्त्व धरती पर जीतेजी संत द्वारा मानव रूप में मिल गये हैं। तो, ऐसे संत के साथ अंतरायरहित का संबंध करके, उनकी आङ्गा में रह कर, हमारे दोषों- स्वभावों से निवृत्ति पा सकते हैं। अनंत जन्मों से चिपके वासना- स्वभाव जो तप, यज्ञ, योग, साधना, दान जैसे किसी भी साधन से निर्मल नहीं होते, वे तो केवल ऐसे निर्गुण संत की गोद में बैठ कर उससे निजात पा सकते हैं। प्रभु की मूर्ति का सुख यहीं जीतेजी पा सकते हैं।

‘सहृदयी’ में कई शीर्षकों के अंतर्गत गुरुहरि काकाजी महाराज के जीवन प्रसंगों तथा अन्य



संतों-मुक्तों के दृष्टांतों द्वारा अध्यात्म मार्ग पर चल रहे पथिकों की बाधाओं का अलज-अलग रूप और उसका निवारण बता कर साधकों को निहाल किया है।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी ने यह भी आशीर्वाद दिया है— **किसी साधक को दिन-प्रतिदिन वृद्धि पानी हो, परेशानी-उद्बेग से बाहर निकलना हो, दोषों से मुक्ति पानी हो, अखंड अक्षरधाम के सुख का भोक्ता बनना हो, तो इस पुस्तक के अभ्यास से वह सिद्ध होगा।** सो, भजन के बाद सभी के श्रेय हेतु पू. आनंदस्वरूपस्वामी इस ग्रंथ का पठन करने व्यासपीठ पर बैठे। जगरांव के पू. दर्शन सिंह भट्टीजी ने श्री ठाकुरजी, प.पू. गुरुजी एवं पू. आनंदस्वामी पूजन करके हार अर्पण किया। इसी दौरान, audio के माध्यम से सहृदयी ग्रंथ की विशेषता बताते भजन की निम्न पंक्तियाँ प्रस्तुत होने पर सभी भावुक हृदय से प्रार्थना करने लगे—

नादब्रह्म जब शब्द बना और काकाजी बने वाहन,
सहृदयी ग्रंथ तब लिखा गया, शुद्ध पवित्र और पावन,
काकाजी ने हृदयकमल से, सहृदयी ग्रंथ का पोत बुना,
ज्ञानमंत्र बना भक्त हृदय का, वो सहृदयीभाव मुकुट बना,
हे काकाजी के स्पंदन, तुझे आत्मभाव से वंदन।
कसौटियाँ जीवनभर की ये ग्रंथ पठन से उतरे पार,
व्याधि, विपदा से जो निकाले, बेड़ा लगा दे जो उस पार,
हे सुहृदभाव के स्पंदन, तुझे हम भक्तों के वंदन,
सहृदयी ग्रंथ तुझे वंदन...

प.पू. गुरुजी के सोफे की पृष्ठभूमि पर art effect के साथ ‘सहृदयी’ ग्रंथ के मुख्यपृष्ठ को 3D effect देकर लगाया था। पूजनविधि के उपरांत पू. आनंदस्वामी ने प्रकरण 1 के अंतर्गत शीर्षक ‘संत समागम और सेवन’ पढ़ना आरंभ किया और तकरीबन आधा घंटा प.पू. गुरुजी ने उसका निरूपण करके मार्गदर्शन दिया।

प.पू. गुरुजी की जीवनशैली है कि वे युग की नई तकनीक से खुद परिचित रहते हैं और उसका भक्तिलपी सदुपयोग करते व करवाते हैं। इसलिये आज की युवा पीढ़ी को प.पू. गुरुजी आज के युग के ही लगते हैं। प.पू. गुरुजी संतों, सेवकों, बहनों एवं गृहस्थों को अपने वर्तन से यही निर्देश करते हैं कि समय के अनुरूप अपने आपको ढालेंगे-चलेंगे, तो आपस में harmony create होगी। आजकल YouTube पर Talk Shows या Podcasts इत्यादि द्वारा कई



विषयों पर होती चर्चाओं से लोगों को past, present और future का ज्ञान होता है। सत्संग समाज में अधिकांशतः मुक्तों के मन में अपने गुरु के प्रति बहुत महिमा होती है, लेकिन कई बार एक शर्म, mike पर बोलने की घबराहट या शब्दों के उचित प्रयोगों की उलझन के कारण लोग अपने भाव प्रकट करने से हिचकते हैं। Talk Shows या Podcasts में दो लोगों के बीच होती सामान्य वार्ता में व्यक्ति आसानी से - खुल कर अपनी बात कह पाता है। सो, इस बार प्रासंगिक उद्बोधन को नया रूप देते हुए, 'भक्तों का भागवत' शीर्षक के अंतर्गत उसे प्रस्तुत करने का तय किया। इसके लिये पू. पुनीत मल्होत्रा ने अपने साथियों के साथ मिल कर भक्तों की सूची तैयार की। फिर उन भक्तों से बात करके, उन्हें थोड़े प्रश्नों की पूर्व सूची दी कि वे किस प्रकार प.पू. गुरुजी के संपर्क में आये और किस प्रकार प.पू. गुरुजी ने उनके जीवन में बदलाव किया या किस तरह उन्होंने उनका जीवन सुखमय बनाया इत्यादि। बातचीत के दौरान भक्तों को कोई confusion न रहे या वे प.पू. गुरुजी के साथ के प्रसंग भूल न जायें और आसानी से अपने भाव प्रकट कर सकें, इस हेतु पू. पुनीत मल्होत्रा पहले उनके साथ दो-तीन घंटे बैठ कर उनके प्रसंगों के बारे में जान लेते थे। इनके ऐसे छुपे परिश्रम - भक्ति को अंतर से अभिनंदन!

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि —

जैसे भागवत में श्री कृष्ण के लीला चरित्रों का वर्णन सुन कर, उसकी दिव्यता में डूब कर सहज ही शांति मिलती है। इसी प्रकार, प्रगट प्रभु के संबंध वाले भक्तों के पास संत के साथ का या सत्संग के कई अनुभवों, एहसास का इतिहास है, स्मृतियों का खजाना है, दिव्यताभरी कहानियाँ हैं। यूँ हर एक भक्त का अपना ही एक भागवत है।

सो, 'सहदयी' के पठन एवं निरूपण के बाद, पू. राकेशभाई शाह ने प्रथम वक्ता पू. राहुल (सनी) भास्कर का संक्षिप्त परिचय देकर 'भक्तों का भागवत' कार्यक्रम का आरंभ किया। श्री ठाकुरजी को सुन्दर कृत्रिम फूलों से कलात्मक रूप से सजाया था। प.पू. गुरुजी की मूर्ति के पीछे screen effect देकर 'भक्तों का भागवत' शीर्षक लिखा था और मूर्ति के समक्ष दो सोफों पर बैठ कर, पू. पुनीत मल्होत्रा ने पू. सनी भास्कर का स्वागत करके बातचीत शुरू की। करीब एक घंटा उन्होंने भावुक हृदय से अपने अनुभवों से सबको अवगत कराया।

कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में भक्तों के प्रति एक भक्ति का दर्शन हुआ। आत्मीयता से जुड़े पू. सपनजी के यहाँ से coloured printer एक महीने के लिये मंदिर लाया गया। श्री ठाकुरजी के यिंहासन के समक्ष बैठ कर पू. सनी जब माहात्म्यगान कर रहे थे, उस समय पूरे दृश्य



के साथ उनका photo खींचा गया। वार्तालाप दौरान photo का print निकाल कर, उस पर प.पू. गुरुजी से हस्ताक्षर कराये गये। फिर उसे frame में लगा कर स्मृति भेंट के रूप में पू. सुहृदस्वामीजी ने तत्काल पू. सनी को दिया।

सभा के अंत में पू. राजेश खन्नाजी ने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी को भागवती दीक्षा दिन निमित्त हार अर्पण किया और प.पू. गुरुजी की प्रसादी का यह हार पू. बाती दीदी व पू. मीरा दीदी ने अपने दीक्षा दिन निमित्त प.पू. दीदी को अर्पण किया। तत्पश्चात् प.पू. दीदी ने प्रसादी का यह हार इन दोनों को आशीर्वाद रूप पहनाया। फिर विसर्जन प्रार्थना करके, तुलसी युक्त धुन की प्रसादी का जल लेकर सबने महाप्रसाद के लिये प्रस्थान किया।

यूँ, 11 मई से रोज़ अनुष्ठान शिविर में धुन-भजन के बाद ‘सहृदयी’ ग्रंथ का पठन होता, प.पू. गुरुजी मार्गदर्शन देते और जो हरिभक्त ‘भक्तों का भागवत्’ में स्वानुभवों का लाभ देने आते, उनका संक्षिप्त परिचय पू. राकेशभाई शुरुआत में देते। कार्यक्रम के अंत में सत्संग के छोटे बच्चे उन भक्तों को प.पू. गुरुजी के हस्ताक्षर वाली स्मृति भेंट देते। इस बार शिविर के अंतिम दिनों में 9 जून को मुंबई-पवई से प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई तथा पू. किशोरभाई मास्टर (लंदन) के साथ चार दिन अपने दर्शन-समागम का लाभ देने के लिये पद्धारे थे। सो, प.पू. वशीभाई ने 9 जून से 11 जून ‘सहृदयी’ ग्रंथ का निरूपण करके प्रगट संत के साथ संबंध दृढ़ करने की अनेक करामात बताई।

12 जून की सायं गुरुहरि काकाजी महाराज का 106वाँ प्राकट्य दिन प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई की निशा में मनाने के लिये सब एकत्र हुए। सर्वप्रथम धुन के बाद जगरांव के पू. अनूप टांगरीजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य दिन की बधाई देते हुए भजन प्रस्तुत किया। पू. सरयूविहारीस्वामी ने भगवान् स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी के स्मृति प्रसंगों द्वारा प्रार्थना की। पू. किशोरभाई मास्टर (लंदन) ने गुरुहरि काकाजी के साथ बिताये अलौकिक क्षणों का वर्णन किया और मुंबई के डॉ. पू. केयुर अध्यर्यु ने अपने 60वें जन्मदिन निमित्त गुरुहरि काकाजी द्वारा समझाई गई चमत्कारिक धुन की अद्भुत महिमा बता कर गुणातीत स्वरूपों से आशीष याचना की। तत्पश्चात् कई दोषों से मुक्त होकर, गुरुहरि काकाजी के सिद्धांतों पर चलने की ‘अरदास’ करता नया भजन पू. राकेशभाई, पू. डॉ. पंकज रियाज़जी, पू. सौरभ चौहानजी, पू. ऋषभ नरला एवं सेवक पू. विश्वास ने प्रस्तुत किया। पू. विक्कीजी, पू. अमित शुक्ला, पू. नक्षत्र एवं पू. पुण्यम् ने वाद्य यंत्र से साथ देकर वातावरण को



दिव्यता से भर दिया।

भजन के बाद प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद बरसाते हुए कहा—

...डॉ. केयुर ने कहा कि मुझे धुन करके सभी कार्य करने का रास्ता मिल गया है। अब मैं इसी रास्ते पर चलता हूँ और आगे भी इसी रास्ते पर चलता रहूँगा...

दूसरी बात— जैसे कि प्रार्थना रूपी भजन में गाया कि हम हर चीज़ के लिये इधर-उधर आशा, अपेक्षा रखने के बजाय प्रभु की अपेक्षा रखें। प्रभु की अपेक्षा रखने का मतलब इन्हें याद करके इनसे प्रार्थना किया करें कि हमारा ऐसा जीवन बने। खास तो मुंबई से वशी तीन दिन से यहाँ आये हुए हैं, कल जायेंगे। तो जैसे बापा कहते थे, वैसे इनकी बातों से हम अपनी 'भमली' भर लें। 'भमली' मतलब अपना लोटा भर लें और फिर जब भी कोई उलझन, परेशानी आये, तो उसी में से प्रेरणा लेते हुए हम fresh हो जाएँ। वशी ऐसे आशीर्वाद दे जाएँ यही प्रार्थना...

प.पू. वशीभाई ने कई प्रसंगों द्वारा गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी का माहात्म्यगान करते हुए निम्न आशीष दी—

...आज हमारे काकाजी महाराज का 106वाँ प्राकट्य दिन है। गुरुजी की भावना ऐसी रहती है कि 12 मई से 12 जून एक महीना सत्संग का विशिष्ट शिविर करें। उसे 'अनुष्ठान शिविर' नाम दिया है, जिसमें मुंबई, गुजरात, पंजाब से भक्त आते हैं। पंजाब के भक्तों को धन्यवाद है कि आज सुबह 5 बजे उठ कर, 6 बजे की बस पकड़ कर यहाँ आये हैं। भक्तों का भाव, आस्था और श्रद्धा है, सब भक्तों को खूब-खूब प्रणाम, जय स्वामिनारायण और काकाजी के प्रागट्य दिन की खूब-खूब बधाई। पंजाबी में कहते हैं लख-लख बधाई...

सभी अवतार पृथ्वी पर आते हैं, तो मानवजाति के कल्याण के लिये कुछ न कुछ छोड़ जाते हैं। फिर वह भक्ति, प्रार्थना, प्रेम या प्रेरणा हो। ऐसे ही स्वामिनारायण भगवान् पृथ्वी पर आये और केवल 49 साल की उम्र में पृथ्वी पर उपासना, liberation का मार्ग प्रशरत किया। उनके प्राकट्य के केवल 250 साल हुए हैं, लेकिन शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने उपासना की जो बात की, तो आज हम देख रहे हैं कि मुस्लिम देश 'अबू धाबी' में स्वामिनारायण का हिंदू मंदिर बन गया। केवल मंदिर ही नहीं बना, इस बार रमजान का रोज़ा पूरा करने बड़े-बड़े शेर भी मंदिर आये। तो इस सब घटना क्रम के लिये मैं नहीं कहता हूँ, साहेब दादा भी कहते हैं कि इस सबका श्रेय काकाजी को जाता है। क्योंकि महाराज पृथ्वी पर आये, लेकिन उनका स्वरूप जैसा है, वैसा पहचाना नहीं गया। इसलिये जैसे पार्वतीजी के साथ महादेवजी की



पूजा, सीताजी के साथ रामजी की पूजा, लक्ष्मीजी के साथ नारायण की पूजा इसी भावना से शाल्कीजी महाराज और योगीजी महाराज ने 'भक्त' सहित 'भगवान' अर्थात् 'अक्षर' सहित 'पुरुषोत्तम' की पूजा को उजागर किया। कल हम श्रीजी महाराज के दर्शन कर रहे थे, तो साथ में खड़े आर.पी. गुप्ताजी बोले कि महाराज की आँखें ऐसी लगती हैं कि जैसे हमें ही देख रही हैं और हमारे योगी बापा जब मूर्तियों की पूजा करते थे, तो कहते थे कि आज भगवान ने अच्छी तरह खाया है, तो तबीयत अच्छी लगती है। गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति ऐसी लगती है कि नैवेद्य ग्रहण करने से गाल भर गये हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी मूर्तियाँ भी प्रगट हैं और इनके पास आकर भाव से धुन-प्रार्थना करेंगे, वो भगवान खीकार करते हैं।

आज डॉक्टर केयुर ने धुन की बात की। सचमुच यह grand topic है। स्वामिनारायण धर्म के लिए काकाजी की जो भी बड़ी देन है, तो वो धुन है। पहले स्वामिनारायण धुन कोई musical गाता था, कोई भजन में गाता था। पर, महाराज ने लोया 6 के वचनामृत में लिखा है कि कोई भी problem - कठिनाई आ जाये, तो होंठ आपस में मिलाये बिना, निर्लज्ज होकर उच्च स्वर में जीभ से स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण बोलना। ऐसे भाव से भजन-धुन करोगे, तो हरेक problem का solution मिलता है। गुरुजी का तो हमने देखा है कि परछाई दीदी का kidney transplant operation या प्रणव के liver transplant operation के समय काकाजी की theory से भक्तों से धुन करवाई। यहाँ हॉल में भी लिखा है कि कठिनाइयों, परिस्थिति को गिने बिना अपनी निष्ठा के बलबूते पर भजन करके कदम उठाओ। पर, इसके लिए प्रगट संत चाहिए। लेकिन, काकाजी ने बड़ी कृपा की है कि गुरुजी जैसे संत आपको भेंट में दिए हैं। जिन भक्तों को काकाजी के स्थूल दर्शन नहीं हुए हैं, उन्हें गुरुजी के रूप में काकाजी के दर्शन होते हैं...

...जापान के लोगों ने prove किया है कि एक बर्टन में डले पानी के आगे खूब गालियाँ बोल कर उसमें चावल पकाया, तो वह काला हो गया और दूसरे बर्टन के पानी के आगे मंत्रजाप करके चावल पकाया, तो वह सफेद रहा... काकाजी जानते थे कि आगे की पीढ़ी से उपवास, जप-तप नहीं हो पाएगा, सो, धुन का एक सरल साधन दे दिया। काकाजी ने पंचयज्ञ पुस्तक के प्रथम विभाग में 'जपयज्ञ' के बारे में लिखा है। गीता में भी लिखा है यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि। भगवान कहते हैं कि मुझे यज्ञों में जपने वाला पवित्र नाम समझो। ऐसा भाव जब हम करते हैं, तब भगवान प्रगट होते हैं।



...गुरुजी धुन द्वारा एक महीने के लिये नहीं, बल्कि पूरा जीवन बदलने की *training* देते हैं। जब प्रसंग बनते हैं, तो बदलाव आता है... *spirituality* में जीव में से शिव, *negative* में से *positive*, *bad* में से *good* करने का ये एक *process-transformation* है। सारी साधना यहीं बताती है कि *We have to transcend our ego*. पृथ्वी पर *ultimate* बात यहीं है कि *to go beyond yourself*. प्रत्येक धर्म आत्मदर्शन के बारे में बताता है। स्वरहित किस प्रकार हो सकें, वो सन् 1971 में काकाजी ने बहुत सरल माषा में बताया। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के स्वधाम पथारने के बाद काकाजी सांकरदा पथारे। गुरुजी उस समय सांकरदा रहते थे। काकाजी वहाँ कथावार्ता में बोले कि योगीजी महाराज स्थूल देह में अब नहीं हैं, लेकिन वे अब भी गुणातीत परिवार में अनंत स्वरूप से विराजमान हैं। बड़े पुरुष जाते ही नहीं हैं। उसी भाव से आज की इस सभा को याद करके जो स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, बोलेगा, उसका काम होगा। ये दावे की बात है क्योंकि काकाजी कहते थे कि ये अद्वितीय की सभा है। हम सबको गुणातीत परिवार में साथ में रहकर गुणातीत सुहृदभाव रखकर जीवन जीना है। सांकरदा में तब काकाजी से गुरुजी ने प्रश्न पूछा कि गुणातीत सुहृदभाव कैसे रहे? तब काकाजी ने कहा—राजा, गुणातीत सुहृदभाव तो स्वरहित होने से संभव होता है। *When you go beyond yourself, then only you can experience universal brotherhood...* काकाजी का ये जवाब सुनकर गुरुजी-मुकुंदस्वामी ने फिर पूछा कि *स्वरहित कैसे हों?* See we have to match our wavelength with the wavelength of our guru. गुरुजी ने काकाजी के साथ अपनी wavelength match की थी कि काकाजी जिस level से बात करना चाहते हैं, गुरुजी उसके मुताबिक प्रश्न पूछते। गुरुजी की बात का उत्तर देते हुए काकाजी ने कहा कि 'योगी के संबंधवाले सब प्यारे लगें, तो समझना कि गुणातीत सुहृद बन जाये हैं। फिर काकाजी ने दृष्टांत देते हुए कहा कि अफ्रिकन के बालक का रंग काला होता है, पर वह अपने मां-बाप को बहुत सुंदर ही लगता है। ऐसे ही आप लोग कैसा भी वर्तन करते हो, पर मुझे योगीरूप ही-ब्रह्मस्वरूप दिखते हो। मैं तुम में तुम्हारा स्वरूप नहीं देखता...

आज सुबह काकाजी के सिद्धांत से गुरुजी हम सबको यहीं कह रहे थे कि जब तक हम भगवान स्वामिनारायण, योगीजी महाराज, काकाजी या माता-महादेव के संबंध वाले के लिए ऐसा नहीं मानेंगे कि अपना है, तब तक माहात्म्य की विशालता प्रगट नहीं होती है। गुरुजी प्रसंग द्वारा यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि रात को चिदाकाश हॉल में उनके साथ सोने वाले बच्चे आवाज़



नहीं करते, बल्कि योगीजी महाराज, काकाजी आवाज़ करते हैं। ऐसा मानना मुश्किल है, लेकिन वे इस भाव में हमें ले जाना चाहते हैं। जब तक इस भाव में नहीं जायेंगे, तब तक गुणातीतभाव या सुहृदभाव बोलेंगे, लेकिन वो प्रगटा नहीं सकेंगे। जबकि काकाजी के लिए तो ये सब एकदम सहज था। वे ऐसा क्यों कह सकते थे, क्योंकि वे ऐसा जीते थे...

गुरुजी हमारे लिये इतना परिश्रम करते हैं, लेकिन अब हमारी जिम्मेदारी है। आज जैसे कि नित्या दीदी द्वारा बनाये भजन के बारे में गुरुजी ने कहा कि यह प्रार्थना हमारा जीवन बने, तो हम काकाजी से प्रार्थना करते हैं कि आप हमसे जो करवाना चाहते हो, वैसा कर पायें और सबको काकाजी खूब-खूब दें, सब अपने तरीके से तन, मन, धन और आत्मा से सर्वांगी सुखी हों—काकाजी और गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है।

तदोपरांत पुलिस अधीक्षक श्री संजीव गौतमजी ने संक्षिप्त में अपना भाव प्रकट किया और पू. अजय तनेजाजी एवं पू. राजीव शर्माजी ने भजन प्रस्तुत किया। कई महीनों से समय-समय पर पू. गुरुजी मंदिर के संतों-सेवकों को जीवनमंत्र के रूप में एक ब्रह्मसूत्र लिख कर दे रहे थे। आज के मंगलकारी दिन पर पू. राकेशभाई शाह के लिए भी आशीर्वाद रूप एक दिव्य संदेश पू. गुरुजी ने लिखा था, जिसे पू. वशीभाई ने पढ़ा और फिर पू. गुरुजी तथा पू. वशीभाई ने मिलकर उन्हें दिया। जैसे कि हर रोज़ ‘भक्तों का भागवत’ कार्यक्रम पूरा होने के बाद, उसमें भाग लेने वाले मुक्त को पू. गुरुजी द्वारा लिखित आशीर्वाद वाली स्मृति भेंट दी जाती थी, वैसी ही स्मृति भेंट पू. गुरुजी ने पू. वशीभाई को स्वहस्तों से दी। पू. राकेशभाई ने गुजराती भाषा में लिखित वे आशीर्वाद पढ़े, जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न प्रस्तुत है—

पू. वशी, जय खामिनारायण!

तुम्हें क्या लिखूँ? ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के वचन से काकाजी और कांतिकाका जैसे भाई-भाई बन कर जिए, वैसे ही भरतभाई को आगे रख कर, उनके साथ भाई का संबंध रख कर सत्संग की शोभा बढ़ाओ—यही अभीप्सा...

यही तुम्हारे गुरुजी के जय खामिनारायण!

12 जून 2024, बुधवार

तत्पश्चात् गुरुहरि काकाजी महाराज के आध्यात्मिक वारिसदार पू. गुरुजी, पू. दिनकर अंकल, पू. भरतभाई-पू. वशीभाई के प्रति सभी की ओर नतमस्तक होते हुए, पानीपत के पू. नवनीत गोयलजी एवं जगरांव के पू. अनिल वधवाजी ने मिल कर काकाजी



स्वरूप प.पू. गुरुजी को एवं प.पू. वशीभाई को गुरुग्राम के पू. मनोज शर्माजी व पू. शैलेषभाई आचार्य ने हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। भक्तों की भावना ग्रहण करते हुए प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई ने हार पहन कर एक साथ सबको अद्भुत दर्शन दिया। पू. रवि गुप्ताजी (पश्चिम विहार) के संपर्क से मंदिर से अपनेपन से जुड़े पू. सोनौजी को प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का हार पहना कर प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रशांत विहार के पू. आर.पी. गुप्ताजी का भी आज जन्मदिन था। उनकी पोती पू. पृशा (पीहू) ने खुद श्रीजी महाराज की मूर्ति बना कर एक कार्ड बनाया था। उसमें कविता के रूप में निम्न प्रार्थना लिखी थी, जिसे पू. राकेशभाई ने पढ़ कर सुनाया और फिर पू. आर.पी. गुप्ताजी ने वह कार्ड प.पू. गुरुजी को अर्पण किया...

पहचान लें जो आँख का आसूँ गारिशों में भी, वो हैं काकाजी-गुरुजी
बिना कहे देख पाते हैं तकलीफ दिल की, वो हैं काकाजी-गुरुजी
साथ में रहें जो आखिरी सांस तक, वो हैं काकाजी-गुरुजी
खींच कर उतार फेंकते हैं हर गम की चादर, वो हैं काकाजी-गुरुजी
बुंबक तो केवल लोहे को खींचता है; पर जीव को जो खींच लें, वो हैं काकाजी-गुरुजी
किस्मत लिखने वाले को भगवान कहते हैं और जो किस्मत बदल दें, वो हैं काकाजी-गुरुजी
आपकी कृपा की छाँव में पल रहे हैं हम, आप दिखा रहे हो रास्ता और चल रहे हैं हम...

तत्पश्चात् पू. डॉ. केयुर अध्यर्थु को उनके 60वें जन्मदिन एवं पू. पुनीत मल्होत्रा को 'भक्तों का भागवत' कार्यक्रम के अद्भुत संचालन एवं उस हेतु किये गये परिश्रम के लिए प.पू. गुरुजी ने अपने हाथ में माला लिये model की विशिष्ट स्मृति भेंट दी। मुंबई के पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने भी पू. डॉ. केयुर अध्यर्थु को स्मृति भेंट दी। मुंबई के मुक्तों की ओर से पू. अश्वनभाई द्वारा प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई को हार अर्पण होने के बाद, विसर्जन प्रार्थना के साथ गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्योत्सव का समापन हुआ। सबने 'आमरस' का विशिष्ट प्रसाद लिया।

प्रति वर्ष School Certificate के अनुसार 13 जून को भी प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाते हैं। सो, इस बार भी सायं 7:00 बजे उनका प्राकट्य दिन और 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति करने हेतु सब 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्र हुए। गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य दिन के अवसर पर भक्ति अदा करने पंजाब से कई मुक्त आये थे। सो, आज की सभा का



લાભ લેકર દેર રાત કો વે પંજાબ કે લિયે રવાના હોને વાલે થે। અતઃ સભા મેં સર્વપ્રથમ જગરાંવ કે પૂ. અનૂપ ટાંગરીજી ને ‘જારા બંસી બજા મોહના, હમ રાસ રચાયેંગે...’ ભજન પ્રસ્તુત કિયા, તબ સત્સંગ કે છોટે બચ્ચે વ કુછ મુક્ત આનંદવિભોર હોકર નાચને લગે। તત્પશ્ચાત् પૂ. ઉજ્જ્વલ ને ‘પ્રભુ મૂર્તિ સાધે સો સાધુ...’ અપની મધુર આવાજ મેં ગાકર સબકો પ.પૂ. ગુરુજી કી મૂર્તિ મેં લીન કર દિયા ઔર પૂ. ઋષભ નળલા ને ‘મલ્યા હરિ રે અમને...’ ગુજરાતી ભજન ગાકર અપના ભાવ પ્રકટ કિયા। પૂ. પર્વ મહરોત્રા ને મૂલ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી કી તીન બાતેં સુનાઈં। તત્પશ્ચાત् પૂ. આર.પી. ગુપ્તાજી ને શ્રી ઠાકુરજી, પ.પૂ. ગુરુજી ઔર વ્યાસપીઠ પર વિરાજમાન પૂ. આનંદસ્વામીજી કા પૂજન કરકે હાર અર્પણ કિયા। પ.પૂ. ગુરુજી ને ‘સહૃદયી’ ગ્રંથ કે પ્રકરણ 5 - ‘સ્વધર્મ’ કે કુછ અંશ કા નિલુપણ કિયા। પ.પૂ. ગુરુજી કે ત્રૈમાસિક પ્રાકટ્ય દિન નિમિત્ત પૂ. નિત્યા દીદી ને નયા ભજન – ‘સાધુતા અપનાયેં, સિદ્ધ કર લેં મૂર્તિ...’ બનાયા થા, જિસે પૂ. રાકેશભાઈ એવં સેવક પૂ. વિશ્વાસ ને પ્રસ્તુત કિયા। પૂર્ણાહૃતિ કે ઇસ સત્ર મેં પૂ. સુહૃદસ્વામીજી કો અપની ભાગવત કે કુછ અંશ પ્રકટ કરને કી પ્રાર્થના કરતે હુએ, સભી મુક્તોં ને ખડે હોકર તાલિયોં કી ગડુંગડાહટ સે ઉનકા સ્વાગત કિયા। પ.પૂ. ગુરુજી ને ભી ખડે હોકર તાલિયોં બજાતે હુએ અપની પ્રસન્નતા વ્યક્ત કી। પૂ. સુહૃદસ્વામીજી કે મુખ સે પ.પૂ. ગુરુજી દ્વારા સંતોં - સેવકોં કે ચૈતન્ય કી ઘઢાઈ કે પ્રસંગોં કો જાનને કે બાદ, પૂ. શુભમઃ શર્મા ને ઉન્હેં સ્મૃતિ ભેંટ દી।

અનુષ્ઠાન શિવિર મેં talk show કા કાર્યક્રમ રખને સે પહલે trial કે તૌર પર પૂ. ચિન્મય જાની સે વાર્તાલાપ કી ગઈ થી, સો ઉન્હેં ભી ઇસકી સ્મૃતિ ભેંટ પ.પૂ. ગુરુજી ને આશીર્વાદ લિખ્ય કર દી। તત્પશ્ચાત् પૂ. રાકેશભાઈ ને પ.પૂ. ગુરુજી દ્વારા પૂ. સુહૃદસ્વામીજી ઔર પૂ. ચિન્મય જાની કો લિખે આશીર્વાદ પઢે। સમય કાફી હો ગયા થા, લેકિન કેવળ સંત હી નહીં, બલ્કિ ઉનકે સંબંધ વાલે ભક્તોં કી વિભિન્ન સેવાઓં કે યોગદાન કા માહાત્મ્યગાન બાકી થા। જૈસે કિ મૂલ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી ને પ્રથમ પ્રકરણ કી પહલી બાત મેં ઉલ્લેખ કિયા હૈ કી ભગવાન સ્વામિનારાયણ અક્ષરધામ સે અપના સંપૂર્ણ ઐશ્વર્ય - પાર્ષદ સાથ લેકર પૃથ્વી પર આયે હૈને, તો પૂ. પુનીત મલ્હોત્રા ને ભાવુક હૃદય સે અક્ષરધામ કે મુક્તોં કી નિમ્ન કર્ડ સેવાઓં એવં પ.પૂ. ગુરુજી કે અથક્ પરિશ્રમ કા વર્ણન કરતે હુએ ધન્યવાદ દિયા—

- ❖ દોપહર કો પ્રસાદ લેને કે બાદ સંતોં કે સાથ મિલકર છોટે બચ્ચે કલ્પવૃક્ષ હાઉલ મેં શિવિર કી પૂર્વ તૈયારી કરાતો।



- ❖ मई-जून की गर्मी में सायं मंदिर में दाखिल होते ही, संतों द्वारा तैयार किया गया ठंडा शर्बत भक्तों को पिलाने की सेवा स्वयंसेवक करते।
- ❖ सायं 7 बजे कल्पवृक्ष में प्रवेश करते मुक्तों का प्रभु के भाव से पूजन स्वयंसेवक करते।
- ❖ रोज़ धुन से पूर्व तुलसी युक्त जल और प्रसाद की व्यवस्था करके श्री ठाकुरजी के समक्ष रखते।
- ❖ धुन के बाद रोज़ साज़ के साथ भजन प्रस्तुत करने के लिये पूर्व तैयारी करते।
- ❖ प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता हेतु छोटे बच्चे तीन 'स्वामी की बातें' बोलने की तैयारी करते।
- ❖ शिविर को शाश्वत बनाने के लिये Photography-video की सेवा के लिये 'आइना' की पूरी team तत्पर रहती।
- ❖ रोज़ के सत्र के बाद दूर से आने वाले कई मुक्त भोजन करके जाते, सो अपना सहयोग देते हुए कई भाभियाँ रोटियाँ बना कर लातीं।

पू. पुनीत मल्होत्रा के भावुक उद्गारों के पश्चात् त्रैमासिक प्राकट्य दिन के उपलक्ष्य में प.पू. गुरुजी को मुक्तों की ओर से पू. निशिथ ध्वनजी एवं उनके समधी पू. जसपाल सिंह भराराजी, पंजाब के मुक्तों की ओर से जगरांव के पू. अनिल कतियालजी-पू. श्यामसुंदर शर्माजी तथा अक्षरज्योति की बहनों द्वारा बनाया हार मुंबई के पू. मनीषभाई ठक्कर-पू. लक्ष्मी शुक्लाजी ने अर्पण किया और विसर्जन प्रार्थना के साथ पूर्णाहुति हुई।

कई मुक्तों की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सेवाओं के फलस्वरूप 'अनुष्ठान शिविर' अविस्मरणीय बना। परंतु, सबसे विशेष तो 87 वर्ष की आयु में प.पू. गुरुजी खुद गरज़ रख कर; सबको अपने दर्शन एवं सरल भाषा में 'सहृदयी' ग्रंथ के गूढ़ रहस्यों को उजागर करके, मुक्तों को प्रगति के पथ की कुंजियाँ देने रोज़ 7 बजे कल्पवृक्ष में आते, तो उनका ऋण कभी चुकाया ही नहीं जा सकता। लेकिन, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन-सूत्रों का मनन-चितंन करके, अपने जीवन में ढालने के लिए कृतसंकल्प होकर, उनके अभिप्राय की भवित करके उन्हें राजी करने लग पड़ेंगे, तो वह शिविर की सच्ची फलश्रुति कही जायेगी!

आइए 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' के सूत्रों का पठन करके अपने अध्यात्म पथ को सरल बनायें और प्रगट संत से संबंध दृढ़ करने की प्रार्थना करें। और... 'भक्तों का भागवत' में मुक्तों ने प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं मंदिर के प्रति जो अपने भाव प्रकट किये, उसके कुछ अंशों को भगवत् कृपा के अगले अंक में पढ़ कर धन्यता अनुभव करेंगे।



श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- * करोड़ जप, तप, व्रत, दान से भी बढ़कर हैं बड़े संत का समागम! बड़े संत अनुग्रह करके हमें भगवान की मूर्ति में लीन कर ही देते हैं। यह अनुग्रह की पराकाष्ठा है। वे अक्षरधाम का आनंद छोड़कर हमारे बीच में आकर रह रहे हैं, वह हम पर उनकी बहुत बड़ी कृपा है।
- * जिसने संत पर संपूर्ण विश्वास रखा है, भगवान उसकी रक्षा इस जन्म में नहीं, हमेशा के लिए-जन्मों जन्म तक करेंगे ही। इसीलिए कहते हैं कि आज सोने का सूर्य उगा है। जहाँ भी रहें, वहाँ भगवान की मिठास है, वहीं अक्षरधाम खड़ा हो जाता है और संत कृपा करके अक्षररूप बना देते हैं।
- * वचनामृत गढ़ा प्रकरण 58 के मुताबिक बड़े पुरुष के गुण जैसे-जैसे ग्रहण करेंगे, वैसे वैसे वे गुण हम में भी आएंगे। अगर उन्हें अतिशय निष्कामी, निर्लोभी, निःखादी, निर्मानी समझेंगे, तो संत तुम्हें भी ऐसा निर्दोष बना देंगे। उसके लिए हमें कोई साधन नहीं करना पड़ेगा।
- * हमारे जीवन के कुरुक्षेत्र का अंत तब ही होगा, जब हम इस मानव स्वरूप संत को पूर्ण रूप से समझेंगे। यह मानना कठिन है, पर जो माने उसका जीवन धन्य हो जाएगा।
- * समागम यानि—समय की पहचान! कथा महिमा से सुननी और प्रगट संत से संबंध दृढ़ करना। साधु की मरजी में रहना और उनकी आँख का इशारा समझना।
- * साधु की दया सभी पर होगी, परंतु कृपा सिर्फ पसंदीदा पात्र पर होगी।
- * काकाजी की निगाह सिर्फ इसी बात पर रहती कि ‘स्वामी मेरे और मैं स्वामी का!’ अगर साधु के साथ हमारा लगाव इस तरह संपूर्ण हो, तो दुनिया की कोई चीज़ हमें हिला नहीं सकती। संत के प्रति राग, वही वैराग।
- * भगवान और संत के सिवा अन्य कहीं आसक्ति न रहे, वही हमने सच्चा संत समागम किया कहा जाएगा।
- * भक्तों से मनमुटाव रखेंगे, तो (सत्संगरूपी) किनारे पर आया हुआ जहाज भी डूब जाएगा।
- * संत जो कहें उसे ही सत्य मान कर करेंगे, तो जीव सुख को पाएगा।
- * ‘प्रभु मेरा अहित कर ही नहीं सकते...’ कैसे भी संजोगों में यह दृढ़ता जानी नहीं चाहिए।
- * सत्संग यानि क्या? तो, सत्पुरुष की आङ्ग और संत की मरजी के मुताबिक क्रिया करनी।
- * संत समागम एवं सेवन क्या? तो, बड़े संत जब हमारी मरजी के विरुद्ध वर्तते दिखाई दें, तब भी उनके प्रति हमें भावफेर न हो, वह संत का सच्चा सेवन किया कहा जाये।



- * ‘महाराज ! मेरे मन से मेरी रक्षा करना’— ऐसी प्रार्थना रो-रो कर करना।
- * सच्चे साधक की परिभाषा क्या? तो, कोई भी तर्क- वितर्क किये बिना संत की आझ्ञा में रहना, संत के वचन का तुंरत पालन करना और विरोध प्रकृति वाले से मैत्री करना।
- * संत में प्रभु काम करते हैं। वे भले मानव रूप में रहते हैं, लेकिन अक्षरधाम से हमारे कल्याण के लिए आये हैं।
- * जब जीव के शुद्धिकरण का कार्य चल रहा होता है, तब नकारात्मक विचार सहज ही आते हैं। वह ब्रह्मस्वरूप बनने की प्रक्रिया है। इस भूमिका से सभी को गुज़रना पड़ता है। योगीजी महाराज पूर्ण हैं, वे अपनी कृपा से हमें इसमें से निकाल ही लेंगे।
- * संत हमारे भीतर का गटर (हठ, मान, ईर्ष्या, लोभ, मोह आदि) साफ़ करते हैं और हमारे दिल में प्रभु प्रगटा देते हैं।
- * योगीजी महाराज जैसा ब्रह्मांड में कोई नहीं मिलेगा। हमें मिले संत खूब समर्थ हैं। उनकी इच्छा, आझ्ञा, छत्रछाया में अगर हम रहेंगे, तो वे अक्षरधाम की शांति दे देंगे।
- * सेवा यानि क्या? भगवान् और संत में पूर्ण विश्वास आ जाये, तो प्रभु के बल से हम सुखी हो जाएंगे और संत हमें इतना समर्थ बना देंगे कि हम दूसरों को शांति प्रदान कर सकेंगे और एक नूतन समाज का निर्माण होगा।
- * समागम यानि— संत की बातों को अपने जीवन में उतारना और उनके बल से जीना। उसके लिए साथ रहना अनिवार्य नहीं, बल्कि निर्दोषबुद्धि से जीना अनिवार्य है।
- * विरोध प्रकृति वाले के साथ मित्रता से रहें और प्रभु को अपना परम हितकारी मानें, वह सच्चा संत समागम किया, कहा जाएगा। योगीजी महाराज ने ऐसा जीवन जिया, इसलिये शास्त्रीजी महाराज उनके बिना रह नहीं सकते थे।
- * योगीजी महाराज स्थूल रूप से शास्त्रीजी महाराज के साथ नहीं रहे, परंतु उनके जीवन में भगवत्स्वरूप संत का ही पहला स्थान था। गोंडल में जब कीर्ति एक्सप्रेस ट्रेन आती थी, तब योगीजी महाराज भक्तों की राह देखते थे और किसी दिन कोई नहीं आता था, तो उदास हो जाते। इस प्रकार भक्तों की सेवा करके उन्होंने शास्त्रीजी महाराज के दिल में अनोखा स्थान बनाया। ऐसा ही स्थान काकाजी ने योगीजी महाराज के दिल में बनाया।
- * हम जब मंदिर में आते हैं और संतों के साथ बैठते हैं, तब जगत् की बातें नहीं करनी चाहिएँ। संत का समागम करना चाहिए, व्यावहारिक टीका- चर्चा, अभाव, निंदा की बातें नहीं करनी चाहिएँ।



- * सेवा तीन प्रकार की होती है— तन, मन और धन से। मन मार कर, विपरीत संजोगों में की गई सेवा साधु ग्रहण करता है। अभाव-अवगुण की बातें करते-करते की गई सेवा को साधु अंगीकार नहीं करते।
- * संत अक्षरधाम से हमारे लिए आए हैं, यही इनकी यथार्थ महिमा है। ग्राम्यवार्ता में ध्यान न देकर, एक चित्त संत की कथा सुननी, संत की स्मृति और महिमा के साथ मंत्रजाप करना चाहिए।
- * भगवत्स्वरूप संत परदेसी साधु हैं; अक्षरधाम से आये हैं, इस धरती के नहीं हैं। इन संत के द्वारा हमें भगवान मिले हैं, ऐसा मानना। यदि हम ऐसा मानेंगे, तो निर्दोष और स्वभावरहित हो जाएंगे। जीव का शिव हो जाएगा यानि भगवान का स्वरूप बन जाएंगे।
- * **संत के समक्ष संकल्परहित रहना यानि अपने विचारों को शून्य करके उनके पास बैठना** और उनसे यही प्रार्थना करनी चाहिए कि स्वामी आपकी जो मरज़ी हो, वह करो। जगत की ख्वाइश नहीं करना।
- * काकाजी का पूरा जीवन देखेंगे तो ख्याल आएगा कि उन्होंने योगीजी महाराज का कैसा सेवन किया! सुबह से लेकर शाम तक काकाजी सत्संग, कथा-वार्ता करते और प्रभु की मरती में ही लीन रहते। **विपरीत परिस्थिति, मान-अपमान उनका संबंध योगीजी महाराज से अलग नहीं कर पाया।** भक्तों की सेवा करना उनकी जीवनशैली थी।
- * जो मुमुक्षु सोचे कि मुझे आँखिरी जन्म कर लेना है, उसके लिए 'सेवा' सबसे सरल उपाय है। सेवा की गहराई को कोई माप नहीं पाया। सेवा का मर्म क्या? तो, सिर्फ महाराज की तरफ नज़र रखकर जीना और उनके भक्तों की सेवा करना। हमें उस भाव में अखंड रहना है और गुणातीत स्वरूप बनना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
- * **स्वरूप के प्रति निर्दोषबुद्धि रखना।** यदि उनमें कोई दोष दिखाई दे, तो वह वास्तव में हमारे अंदर है। भगवान और संत को दिव्य, निर्दोष मानना और वे अक्षरधाम से हमारे लिए आए हैं, ऐसा मानना सबसे बड़ी सेवा है।
- * स्वरूप की तरफ नज़र रखकर सेवा करेंगे; तो सेवा करने में उमंग रहेगी, ऊबेंगे नहीं और आध्यात्मिक विकास होगा, गुणातीतभाव प्रगटेगा।
- * **सेवा से चेतना में बल-आत्मबल भिलता है** और आत्मा सुखी होकर प्रभु की प्राप्ति करती है। चेतना में बल आने से मन और आत्मा एक होकर परमात्मा का सुख ले सकती है, इस मर्म को हम समझें।



- * साधना पूरी होने के बाद भी वासना नहीं टलती; स्वभाव और व्यक्तित्व नहीं मिटता, वो तो सिर्फ संत की कृपा एवं सेवा से ही मिटते हैं। हमें भगवान की मूर्ति अखंड पकड़े रख कर सेवा का मर्म समझना चाहिए। ‘सेवा’ का मर्म क्या? तो, भगवान के भक्त की सेवा करते रहेंगे, वही सेवा का मर्म है। इससे हम अक्षररूप हो जाएंगे।
- * सेवा प्रभु की प्रसन्नता के लिए; उन्हें राजी करने के लिए करनी, अन्यों को राजी करने के लिए नहीं करनी। **केवल प्रभु को राजी करने की भावना वाली सेवा ही सर्वोत्तम है**, उस सेवा से ठंडक रहेगी। सो, यह सेवा प्रभु ने मुझे दी है, इस भावना से अहोभाव से सेवा करनी और यह विश्वास रखना कि प्रभु तो दीन दयालु हैं, वे मुझे निहाल कर ही देंगे।
- * पप्पाजी कहते कि मुझे भक्तों की थाली साफ़ करने के लिये दोगे, तो मैं तुम्हें 10 रुपये दूँगा।
- * सेवा की भावना निरंतर रहनी चाहिए। यह विश्वास हमेशा रखना कि मेरी सेवा प्रभु को पहुँचती है और मेरी करी गई सेवा प्रभु को ही समर्पित है। **वर्ना तो हठ, मान और ईर्ष्या का देवता हमारी सेवा को खा जाता है** और जीव को बल नहीं मिलता।
- * करोड़ तप, जप, दान, यज्ञ के फलस्वरूप जो फल नहीं मिलता, ऐसे प्रभु की प्राप्ति हमें हुई है। ये सत्पुरुष तो प्रकृति-पुरुष से परे हैं। किसी भी साधन से हम इन्हें प्राप्त नहीं कर सकते। सिर्फ इनकी कृपा से इनकी प्राप्ति होगी। उसके लायक बनने के लिए सिर्फ ‘सेवा’ करना ही ज़रूरी है।
- * **सेवा से विनम्रभाव आता है।** तो, सेवा का राजमार्ग यही है कि किसी का भी दोष-प्रकृति देखे बिना, महिमा से सेवा करनी चाहिए।
- * हमें भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि ‘हे प्रभु! आप अपने बल से अपना भजन करवा लेना...’
- * प्रसंग तो बनेंगे ही, परंतु हर प्रसंग पर अपना ही दोष देखकर भजन करना और प्रभु का बल लेना। तब जीव बहुत जल्दी सुखी हो जाएगा।
- * संत की बात झशारे में समझ जाए, वही सच्चा सेवक!
- * **मैं मेरे कल्याण के लिए मंदिर में आया हूँ, दूसरों की upliftment के लिए नहीं।**
- * सेवा वही करनी जिसमें संत की मरज़ी हो, तभी उन्हें राजी कर पाएंगे। हम ऐसा नहीं करते, वह हमारा ‘छिपा अहंकार’ और ‘सात्त्विक मान’ है, जिसे भजन करके पिघाल देना है।
- * सेवा करते समय भी सावधान रहना कि सेवा अपने गुणगान के लिए कर रहे हैं या संत को राजी करने के लिए।



- * **मोक्ष का राजमार्ग – निर्दोषबुद्धि से सेवा करना!**
- * योगीजी महाराज कहते थे कि अगर हम दूसरे भक्त की ओर नज़र रखेंगे कि इतना ठीक नहीं किया, तो हमारी साधना का मार्ग कठिन और लंगड़ा हो जाएगा। लेकिन, मैं स्वामी के मुताबिक़ कितना चलता हूँ? ऐसी स्वयं पर नज़र रख कर सेवा करेंगे, तो करोड़ों जन्म से चिपके पाप ३ महीने में साफ़ हो जाएंगे।
- * भक्ति क्या? तो, सामने आये मुक्त को भगवान का स्वरूप और दिव्य मानना ही भक्ति है!
- * सेवा में सांख्य और योग दोनों आते हैं। भक्तों की सेवा साक्षात् प्रभु की सेवा मान कर करें, तो योग सिद्ध हो जाता है। **महंतस्वामीजी** कहते हैं कि हम सामने वाले को तिलक भी ऐसी भावना से करें कि भगवान को कर रहे हैं, तो वह सेवा भगवान को पहुँचती है। पर, हम ऐसा नहीं कर पाते, इसीलिए काकाजी कहते थे कि हम श्रद्धालु नास्तिक हैं।
- * भावना से की गई कैसी भी सेवा भगवान को पहुँचती ही है। **धुन भी पूर्ण श्रद्धा से करो कि महाराज सुन ही रहे हैं।**
- * योगीजी महाराज का जीवन तो ‘सेवा मूर्ति’! वे कहते कि ‘मैं सेवा करूँगा, वही मेरे लिए आराम है।’
- * गृहस्थ हो या साधु हो, परंतु सेवा संत के वचन से करनी चाहिए। साधु के अंतर की प्रसन्नता के लिए प्रेमभाव से सेवा करना ज़रूरी है।
- * काकाजी और पप्पाजी ने इंद्रियों - अंतःकरण से ऊपर उठकर योगीजी महाराज का सेवन किया। ताड़देव ६० मुंबई तो भक्तों की सेवा का सेंटर जैसा बन गया था। **बापा का ताड़देव** पर **निजी हक्क** था। काकाजी और कांति काका ने शास्त्रीजी महाराज के वचन का अक्षरशः पालन किया। सोनाबा कहती थीं कि भगवान जैसे बलि राजा के घर पहरा देते हैं, ऐसे शास्त्रीजी महाराज दादुभाई के यहां ताड़देव में पहरा देते हैं।
- * काकाजी और कांति काका ने शास्त्रीजी महाराज को राजी किया था। तो, शास्त्रीजी महाराज ने आशीर्वाद दिए थे कि आज से सारा जगत् ख्रत्म, भगवान और संत ही हृदय में है और तुम ब्रह्मरूप हो गए। सेवा का कितना बड़ा फल शास्त्रीजी महाराज ने दिया। हम संत के वचन का तत्काल पालन करते हैं, तो उनके अंतर की प्रसन्नता प्राप्त होती है।
- * जीव को ब्रह्मरूप बनाना यहीं possible है। संत के वचन से जुड़ जाएंगे, तो सत्संग के बीज पड़ेंगे और धीरे-धीरे वे बढ़ेंगे। योगीजी महाराज बहुत भोले लगते थे, पर उनका कैसा vision था? जिन - जिनको उन्होंने साधु बनाया, वे सभी आज स्वयं ब्रह्मरूप बने और दूसरों को शांति प्रदान करने वाले बन गए। योगीजी महाराज तो कहते – ‘युवक मारा हृदय...’



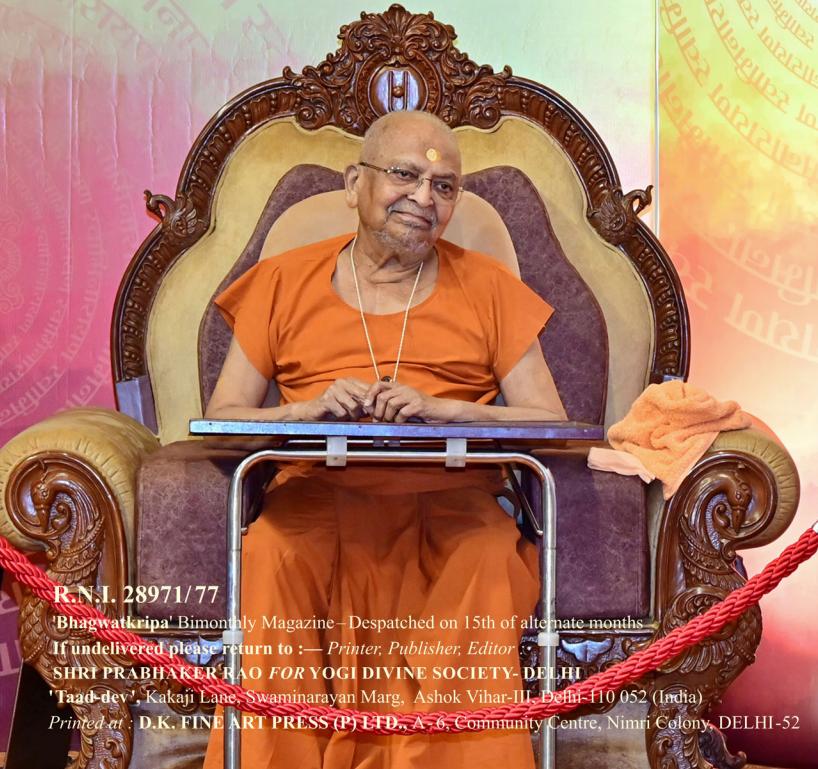
- * हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि सेवा कब तक करनी? अहोभाव से सेवा करना तो जीव में से शिव करने का ज्ञान है।
- * मौके की सेवा करने के लिये हमारा ध्येय पक्का होना चाहिए। सबका स्वधर्म अलग-अलग होता है। साधक का स्वधर्म अलग होता है। साधक का स्वधर्म तो आत्मा और परमात्मा को ही अपने अंदर प्रगटाना है।
- * काकाजी ने जो एकांतिक संत तैयार किये, उनका स्वधर्म अलग-निराला है। हमें तो काकाजी ने select कर लिया।

ब्रतोत्सवसूची

(1) दि. 16.8.'24, शुक्रवार	— पवित्रा एकादशी, ब्रत (श्री ठाकुरजी को रेशम के हार पहनायें)
(2) दि. 19.8.'24, सोमवार	— पूर्णिमा, रक्षाबंधन
(3) दि. 24.8.'24, शनिवार	— नागपंचमी, रांधण छठ
(4) दि. 25.8.'24, रविवार	— शीतला सप्तमी
(5) दि. 26.8.'24, सोमवार	— श्री कृष्ण जन्माष्टमी, ब्रत
(6) दि. 29.8.'24, गुरुवार	— एकादशी, ब्रत
(7) दि. 1.9.'24, रविवार	— गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन
(8) दि. 3.9.'24, मंगलवार	— सावन मास समाप्त
(9) दि. 6.9.'24, शुक्रवार	— केवड़ा त्रीज
(10) दि. 7.9.'24, शनिवार	— गणेश चतुर्थी
(11) दि. 14.9.'24, शनिवार	— जलझीलनी एकादशी, ब्रत
(12) दि. 15.9.'24, रविवार	— वामन जयंती
(13) दि. 17.9.'24, मंगलवार	— अनंत चतुर्दशी, श्री गणेश विसर्जन
(14) दि. 18.9.'24, बुधवार	— गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
(15) दि. 19.9.'24, गुरुवार	— ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्मृति पर्व
(16) दि. 21.9.'24, शनिवार	— ब्रह्मस्वरूप शाळीजी महाराज का स्मृति पर्व
(17) दि. 26.9.'24, गुरुवार	— प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की प्राकट्य तिथि भगवान स्वामिनारायण, अनादि महामुक्त जागास्वामी एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज का स्मृति पर्व
(18) दि. 27.9.'24, शुक्रवार	— ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
(19) दि. 28.9.'24, शनिवार	— एकादशी, ब्रत
(20) दि. 29.9.'24, रविवार	— मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(21) दि. 30.9.'24, सोमवार	— अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व

अनुष्ठान सिद्धि

2024



R.N.I. 28971/77

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— Printer, Publisher, Editor

SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Tazd-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)

Printed at : D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-52



कसौटियाँ जीवनभर की ये ग्रंथ यठन से उतरे पार
व्याधि, विषदा से जो निकाले, बेड़ा लगा दे जो उस पार
हे सुहृदभाव के स्वंदन, तुझे हम भक्तों के बंदन
सहृदयी ग्रंथ तुझे बंदन...